वेद्मन्त्राः

Colophon

This document was typeset using X=MEX, and uses the Sanskrit 2003 font extensively. It also uses several MEX macros designed by *H. L. Prasād*. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma.

See also http://stotrasamhita.github.io/about/

FOR PERSONAL USE ONLY
NOT FOR COMMERCIAL PRINTING/DISTRIBUTION

अनुक्रमणिका i

अनुक्रमणिका

| + | हिन् या सः | 1 |
|---|--|----|
| | पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम् | 1 |
| | पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम् | 3 |
| | केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः | 5 |
| | मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः | 10 |
| | पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः | 11 |
| | हंसगायत्री | 12 |
| | दिक् सम्पुटन्यासः | 13 |
| | षोडशाङ्गरौद्रीकरणम् | 17 |
| | गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थों) न्यासः | 20 |
| | आत्मरक्षा | 21 |
| | शिवसङ्कल्पः | 22 |
| | पुरुषसूक्तम् | 27 |
| | उत्तरनारायणम् | 28 |
| | अप्रतिरथम् | 29 |
| | प्रतिपूरुषम् (सं॰) | 31 |
| | प्रतिपूरुषम् (ब्रा॰) | 31 |
| | शतरुद्रीयम् (सं०) | 32 |
| | शतरुद्रीयम् (ब्रा॰) | 35 |
| | पञ्चाङ्गम् | 36 |
| | अष्टाङ्ग-नमस्काराः | 37 |

| लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम् | 38 |
|------------------------------|----|
| लघुन्यासे देवता-स्थापनम् | 39 |
| कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम् | 41 |
| षोडशोपचार पूजा | 41 |
| श्रीरुद्रनाम त्रिशती | 41 |
| प्रदक्षिणम् | 48 |
| नमस्काराः | 49 |
| चमकानुवाकैः प्रार्थना | 51 |
| प्रार्थना | 55 |
| श्रीरुद्रजपः | 55 |
| ध्यानम् | 56 |
| रुद्रप्रश्नः | 57 |
| चमकप्रश्नः | 64 |
| रुद्रप्रश्नः | 71 |
| चमकप्रश्नः | 78 |
| पुरुषसूक्तम् | 82 |
| नारायणसूक्तम् | 83 |
| विष्णुसूक्तम् | 85 |
| भूसूक्तम् | 85 |

| अनुक्रमणिका | iii | |
|------------------------|-----|--|
| दुर्गा सूक्तम् | 87 | |
| श्रीसूक्तम् | 88 | |
| मेधासूक्तम् | 90 | |
| भाग्यसूक्तम् | 91 | |
| पवमानसूक्तम् | 91 | |
| आयुष्यसूक्तम् | 94 | |
| नवग्रहसूक्तम् | 95 | |
| नक्षत्रसूक्तम् | 98 | |
| गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत् | 104 | |

107

मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः

॥ महान्यासः॥

॥ पञ्चाङ्गरुद्रन्यासः रावणोक्ता पञ्चाङ्गप्रार्थना-सहितम्॥

ओङ्कारमन्त्रसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं तस्मै नकाराय नमो नमः॥१॥ नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इर्षवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नमः॥ या त इर्षुः श्विवतमा श्विवं बभूवं ते धनुः। शिवा श्रिक्यां या तव तयां नो रुद्र मृडय॥

(EAST)

कं खंगं घं छं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गरुद्राय नमः।

महादेवं महात्मानं महापातकनाशनम्। महापापहरं वन्दे तस्मै मकाराय नमो नमः॥२॥ अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयताः रियः स च तान्नः शचीपितः।

(SOUTH)

चं छं जं झं ञं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गरुद्राय नमः।

शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारणम्। शिवमेकं परं वन्दे तस्मै शिकाराय नमो नमः॥३॥ ॐ। निर्धनपतये नमः। निर्धनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यलिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णिलङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यालङ्गाय नमः। भवाय नमः। भवलिङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। शिवलङ्गाय नमः। ज्वलाय नमः। ज्वललङ्गाय नमः। ज्वललङ्गाय नमः। आत्माय नमः। आत्मलङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमलिङ्गाय नमः। एतत्सोमस्यं सूर्यस्य सर्वलिङ्गार्थं स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम्।

(WEST)

टं ठं डं ढं णं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गरुद्राय नमः।

वाहनं वृषभो यस्य वासुिकः कण्ठभूषणम्। वामे शक्तिधरं वन्दे वकाराय नमो नमः॥४॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥

(NORTH)

तं थं दं धं नं। यरलवशषसहोम्।ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गरुद्राय नमः।

यत्र कुत्र स्थितं देवं सर्वव्यापिनमीश्वरम्। यिह्यङ्गं पूजयेन्नित्यं यकाराय नमो नमः॥५॥ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायुस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि।

(UPWARDS)

पं फं बं भं मं। यरलवशषसहोम्। ॐ नमो भगवते रुद्राय।

ऊर्ध्वाङ्गरुद्राय नमः।



॥पञ्चाङ्गमुखन्यासः रावणोक्ता पञ्चमुखप्रार्थना-सहितम्॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नौ रुद्रः प्रचोद्यात्॥

संवर्ताग्नि-तिटत्प्रदीप्त-कनक-प्रस्पर्धि-तेजोरुणम् गम्भीरध्वनि-सामवेदजनकं ताम्राधरं सुन्दरम्। अर्धेन्दुद्युति-लोल-पिङ्गल-जटाभार-प्रबोद्धोदकम् वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनिमतं पूर्वं मुखं शूलिनः॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पूर्वाङ्गमुखाय नमः। (EAST)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जन-द्युतिनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणम् कर्णोद्धासित-भोगिमस्तकमणि-प्रोद्धिन्नदंष्ट्राङ्करम्। सर्पप्रोतकपाल-शुक्तिशकल-व्याकीर्णताशेखरम् वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य वदनं चाथर्वनादोदयम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। दक्षिणाङ्गमुखाय नमः। (SOUTH)

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ प्रालेयाचलिमन्दुकुन्द-धवलं गोक्षीरफेनप्रभम् भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहन-ज्वालावली-लोचनम् । विष्णु-ब्रह्म-मरुद्गणार्चितपदं ऋग्वेदनादोदयम् वन्देऽहं सकलं कलङ्करिहतं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। पश्चिमाङ्गमुखाय नमः। (WEST)

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमौ रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमौ मुनोन्मनाय नमः॥

गौरं कुङ्कमपङ्कितं सृतिलकं व्यापाण्डुमण्डस्थलम् भूविक्षेप-कटाक्षवीक्षण-लसत्-संसक्तकर्णोत्पलम्। स्निग्धं विम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतम् वन्दे याजुषवेदघोषजनकं वक्रं हरस्योत्तरम्॥ ॐ नमो भगवते रुद्राय। उत्तराङ्गमुखाय नमः। (NORTH)

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मं शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥

व्यक्ताव्यक्तनिरूपितं च परमं षड्गिशतत्त्वाधिकम् तस्मादुत्तर-तत्त्वमक्षरिमति ध्येयं सदा योगिभिः। ओङ्कारादि समस्तमन्त्रजनकं सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परम् वन्दे पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय। ऊर्ध्वाङ्गमुखाय नमः। (UPWARDS)

॥ केशादिपादान्त (प्रथमो) न्यासः॥

या तें रुद्र शिवा तुनूरघोराऽपापकाशिनी। तयां नस्तुनुवा शन्तंमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ शिखायै नमः॥ त्याम

अस्मिन् मंहृत्यंर्णवैंऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषा रे सहस्रयोजनेऽवधन्वंनि तन्मसि॥ शिरसे नमः॥ (TOP OF HEAD)

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा १ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ ललाटाय नमः॥ (FOREHEAD)

ह्थतः श्रुचिषद्वसुरन्तिरिक्षसद्घोतां वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वर्त्यसद्देतसद्योमसद्बा गोजा ऋतजा अद्विजा ऋतं बृहत्॥ भ्रुवोर्मध्याय नमः॥ (MIDDLE OF EYEBROWS)

त्र्यम्बकं यजामहे सुग्नियं पुष्टिवधीनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतौत्॥ नेत्राभ्यां नमः॥ (EYES)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमौ नाद्यायं च वैद्यन्तायं च। कर्णाभ्यां नमः॥ (EARS)

मार्नस्तोके तर्नये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेष रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ नासिकायै नमः॥ (NOSE)

अवृतत्य धनुस्त्व सहंस्राक्ष रातेषुधे॥

निशीर्यं शल्यानां मुखां शिवो नः सुमनां भव।

मुखाय नमः॥ (FACE)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षमाचराः।

तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

कण्ठाय नमः॥ (NECK)

नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्ं रुद्रा उपश्रिताः।

तेषा 🗄 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

उपकण्ठाय नमः॥ (LOWER NECK)

नमस्ते अस्त्वायुधायानांतताय धृष्णवै।

उभाभ्यामुत ते नमौ बाहुभ्यां तव धन्वने॥

बाहुभ्यां नमः॥ (SHOULDERS)

या ते हेतिमी दुष्टम हस्ते बभूवं ते धर्नुः।

तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमंयक्ष्मया परिञ्जुज॥

उपबाहुभ्यां नमः॥ (ELBOW TO WRIST)

परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणक्त परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः।

अवं स्थिरा मुघवं ग्रस्तनुष्व मीर्बस्तोकाय तनयाय मृडय॥

मणिबन्धाभ्यां नमः॥ (WRISTS)

ये तीर्थानि प्रचरेन्ति सुकावन्तो निषक्षिणः।

तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

हस्ताभ्यां नमः॥ (HANDS)

सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अङ्गुष्टाभ्यां नमः॥ (ROLL RING FINGERS ON THUMBS)

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालीय नमः कलिवकरणाय नमो बलिवकरणाय नमो बलिप्रमथनाय नमः सर्वीभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥ (ROLL THUMBS ON INDEX FINGERS)

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोर्घोरतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वदार्वैभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्धरूपेभ्यः॥ मध्यमाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON MIDDLE FINGERS)

तत्पुर्रुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥ अनामिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON RING FINGERS)

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपितिर्ब्रह्मणो-ऽधिपितिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ कनिष्ठिकाभ्यां नमः॥ (ROLL THUMBS ON LITTLE FINGERS)

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतये-ऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥

करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ (RUB PALMS OVER ONE ANOTHER, FRONT AND

नमों वः किरिकेभ्यों देवाना हू हद्येभ्यः॥

हृद्याय नमः॥ (HEART)

नमौ गणेभ्यौ गणपंतिभ्यश्च वो नर्मः॥

पृष्ठाय नमः॥ (BACK)

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नर्मः॥

कक्षाभ्यां नमः॥ (ARMPIT TO WAIST)

नमो हिर्णयबाहवे सेनान्ये दिशां च पत्ये नमः॥

पार्श्वाभ्यां नमः॥ (TRUNK)

विज्यं धर्नुः कपर्दिनो विश्वल्यो बार्णवाश उत।

अनेरान्नस्येषेव आभुरस्य निष्क्षिथः॥

जठराय नमः॥ (STOMACH)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्।

सद्पियार पृथिवीं द्यामुतेमां करमै देवायं ह्विषां विधेम॥

नाभ्ये नमः॥ (NAVEL)

मीढुंष्टम शिवंतम शिवो नः सुमनां भव।

परमे वृक्ष आयुधिन्निधाय कृत्तिं वसान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गिहि॥

कट्ये नमः॥ (WAIST)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।

तेषा 🖁 सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

गृह्याय नमः॥ (UPPER REPRODUCTIVE ORGANS)

ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्।

तेषा र सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

अण्डाभ्यां नमः॥ (LOWER REPRODUCTIVE ORGANS)

स <u>शि</u>रा जातवेदा अक्षरं पर्मं पुदम्। वेदाना<u> १</u> शिरसि माता आयुष्मन्तं करोतु माम्॥

अपानाय नमः॥ (ANUS)

मा नौ महान्त्रेमुत मा नौ अर्भुकं मा न उक्षेन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नेस्तुनुवौ रुद्र रीरिषः॥ ऊरुभ्यां नमः॥ लाग्नास्

एष ते रुद्रभागस्तं जुषस्व तेनावसेनं परो मूर्जवतोऽतीह्यवंततधन्वा पिनांकहस्तः कृत्तिवासाः॥

जानुभ्यां नमः॥ (KNEES)

स्रमृष्टजिथ्सोम्पा बाहुश्रध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता। बृह्यस्पते परिदीया रथेन रक्षोहाऽमित्राई अपबार्धमानः॥ जङ्गाभ्यां नमः॥ (KNEE TO ANKLES)

विश्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायमानं च यत्। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ गुल्फाभ्यां नमः॥ (ANKLES)

ये पथां पंथिरक्षय ऐलबृदा युव्युर्धः। तेषार्थं सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥ पादाभ्यां नमः॥ (FEET)

अध्यवोचद्धिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्।

अही 🖢 श्र्य सर्वां ञ्चम्भयन्त्सर्वांश्य यातुधान्यंः॥

कवचाय हुम्॥ (CROSS HANDS ACROSS CHEST WITH TIPS OF FINGERS TOUCHING

SHOULDERS)

नमों बिल्मिने च कव्चिने च नमः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥

उपकवचाय हुम्॥ (REPEAT THE ABOVE AT ELBOW LEVEL)

नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मी्टुषै।

अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः॥

नेत्रत्रयाय वौषट्॥ (TOUCH INDEX, MIDDLE, RING FINGERSACROSS THE THREE

EYES)

प्र मुं अधन्वंनुस्त्वमुभयोराह्नियोर्ज्याम्।

यार्श्च ते हस्त इषवः परा ता भंगवो वप॥

अस्राय फट्॥ (SLAP INDEXAND MIDDLE FINGERS OF RIGHT HAND ON LEFT PALM)

य प्तावंन्तश्च भूयाश्सश्च दिशौ रुद्रा वितस्थिरे। तेषाश्सरहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥

इति दिग्बन्धः॥ (SNAP MIDDLE AND THUMB WITH CLICKING SOUNDS AROUND

SELF)



॥ मूर्घादिपादान्त दशाक्षरी दशाङ्ग (द्वितीयो) न्यासः॥

ॐ मूर्झे नमः। नं नासिकाय नमः। मों ललाटाय नमः। भं मुखाय नमः। गं कण्ठाय नमः। वं हृदयाय नमः। तें दक्षिणहस्ताय नमः। रुं वामहस्ताय नमः। द्रां नाभ्ये नमः। यं पादाभ्यां नमः।

॥ पादादिमूर्घान्त पञ्चाङ्ग (तृतीयो) न्यासः॥

सुद्योजातं प्रपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ पादाभ्यां नमः॥

वामदेवाय नमों ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमों रुद्राय नमः कालीय नमः कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलीय नमो बलेप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मनाय नमेः॥ ऊरुभ्यां नमः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वदार्वैभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ हृदयाय नमः॥

तत्पुरुषाय विद्महै महादेवायं धीमहि। तन्नौ रुद्रः प्रचोदयौत्॥ मुखाय नमः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपितुर्ब्रह्मणो-ऽधिपितुर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ हंस हंस मूर्भे नमः॥

॥ हंसगायत्री ॥

अस्य श्री हंसगायत्री महामन्त्रस्य। अव्यक्त परब्रह्म ऋषिः। अव्यक्त गायत्री छन्दः। परमहंसो देवता॥ हंसां बीजम्। हंसीं शक्तिः। हंसूं कीलकम्॥

परमहंस-प्रसाद-सिद्धर्थे जपे विनियोगः॥

हंसां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हंसीं तर्जनीभ्यां नमः। हंसूं मध्यमाभ्यां नमः। हंसें अनामिकाभ्यां नमः। हंसीं किनिष्ठिकाभ्यां नमः। हंसः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। हंसां हृदयाय नमः। हंसीं शिरसे स्वाहा। हंसूं शिखाये वषट्। हंसें कवचाय हुम्। हंसीं नेत्रत्रयाय वौषट्। हंसः अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम् इति दिग्बन्धः॥ ॥ध्यानम॥

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं तिमिरापहारम्। पश्यामि ते सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम्॥

हंसहंसात् परमहंसः सोऽहं हंसः॥

हंस हंसायं विदाहें परमहंसायं धीमहि। तन्नों हंसः प्रचोदयात्॥

(एवं त्रिः)

हंस हंसेति यो ब्रूयाद्धंसो नाम सदाशिवः। एवं न्यासविधिं कृत्वा ततः सम्पुटमारभेत्॥

॥दिक् सम्पुटन्यासः॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [ॐ] लं। त्रातार्मिन्द्रमिवतार्मिन्द्र्र हवेहवे सुहव्र शूर्मिन्द्रम्। हुवे नु शकं पुरुहृतमिन्द्र हुं स्वस्ति नो मुघवा धात्विन्द्रः॥ _ लं भूर्भुवः सुर्वः। इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतय ऐरावतवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। पूर्वदिग्भागे ललाटस्थाने लं इन्द्राय नमः। इन्द्रः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [इन्द्रः संरक्षतु॥] 11 8 11 ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [नं] रं। त्वन्नों अग्ने वर्रुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽवं यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहितमः शोशुंचानो विश्वा द्वेषा रेसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्॥ रं भूर्भुवः सुर्वः। अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतयेऽजवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। आग्नेयदिग्भागे नेत्रयोः स्थाने रं अग्नये नमः। अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [अग्निः संरक्षतु॥] 11211 ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [मों] हं। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजाँ।

यस्मिन्नेनम्भ्यिषश्चन्त देवाः। तद्स्य चित्रश् ह्विषां यजाम॥ हं भूभुंवः सुर्वः। यमाय दण्डहस्ताय धर्माधिपतये महिषवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः। दक्षिणदिग्भागे कर्णयोः स्थाने हं यमाय नमः। यमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [यमः संरक्षतु॥]॥३॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[मं] षं। असुन्वन्तमयंजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यां तस्कर्स्यान्वेषि। अन्यमस्मिद्दंच्छ सा तं इत्या नमों देवि निर्ऋते तुभ्यंमस्तु॥ षं भूभुंवः सुवंः। निर्ऋतये खङ्गहस्ताय रक्षोधिपतये नरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

निर्ऋतिदिग्भागे मुखस्थाने षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [निर्ऋतिः संरक्षतु॥]॥॥॥॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[गं] वं। तत्त्वां यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविभिः।

वं भूर्भुवः सुर्वः। वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

पश्चिमदिग्भागे बाह्वोः स्थाने वं वरुणाय नमः। वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वरुणः संरक्षतु॥]॥५॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्। [वं] यं। आ नौ नियुद्धिः श्वातिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्।

वायों अस्मिन् ह्विषिं मादयस्व। यूयं प्रांत स्वस्तिभिः सद्गं नः॥ यं भूर्भुवः सुवंः। वायवे साङ्कराध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये मृगवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

वायव्यदिग्भागे नासिकास्थाने यं वायवे नमः। वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [वायुः संरक्षतु॥]॥६॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[तें] सं। वयर सौम व्रते तर्व। मनस्तनूषु बिभ्रतः।

प्रजावंन्तो अशीमहि॥

सं भूर्भुवः सुर्वः। सोमाय अमृतकलशहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

उत्तरदिग्भागे हृदयस्थाने सं सोमाय नमः। सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [सोमः संरक्षतु॥]॥७॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[रुं] शं। (ऋक्) तमीशाँनं जर्गतस्तस्थुष्स्पतिम्। धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदंसामसंदृधे रक्षिता पायुरदंब्यः स्वस्तयै॥

दां भूर्भुवः सुर्वः। ईशानाय त्रिशूलहस्ताय भूताधिपतये वृषभवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कार-भूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ईशानिदग्भागे नाभिस्थाने शं ईशानाय नमः। ईशानः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ईशानः संरक्षतु॥]॥८॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[द्रां] खं। (ऋक्) अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भर्रहृतौ सजोषाः।

यः शंसते स्तुवते धार्यि पुज्र इन्द्रंज्येष्ठा अस्माँ अवन्तु देवाः॥ खं भूर्भुवः सुवः। ब्रह्मणे पद्महस्ताय विद्याधिपतये हंसवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

ऊर्घ्वदिग्भागे मूर्घिस्थाने खं ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [ब्रह्मा संरक्षतु॥]॥९॥

ॐ भूर्भुवः सुवरोम्।

[यं] हीं। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी।

यच्छांनः शर्मे सप्रथाः॥

हीं भूर्भुवः सुर्वः। विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय साङ्गाय सायुधाय सशक्तिपरिवाराय सर्वालङ्कारभूषिताय उमामहेश्वरपार्षदाय नमः।

अधोदिग्भागे पादयोः स्थाने हीं विष्णवे नमः। विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु॥ [विष्णुः संरक्षतु॥] ॥१०॥

॥ षोडशाङ्गरौद्रीकरणम्॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अं। नर्मः शम्भवं च मयोभवं च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ विभूरेसि प्रवाहणो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हिश्सीः॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिखास्थाने रुद्राय नमः॥१॥ ॐ भूर्भुवरसुर्वः।ॐ आं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ विह्रिरिस हव्यवाहेनो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ आं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। शिरस्थाने रुद्राय नमः॥२॥ ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ इं। नर्मः शुम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ श्वात्रौऽसि प्रचेता रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ इं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मूर्घिस्थाने रुद्राय नमः॥३॥ ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ईं। नमं: शुम्भवें च मयोभवें च नमं: शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ तुथौऽसि विश्ववैदा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽम्ने पिपृहि मा मा _ हिश्सीः॥ ईं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ललाटस्थाने रुद्राय नमः॥४॥ ॐ भूर्भुवरसुवं:।ॐ उं। नर्मः शम्भवे च मयोभवे च नर्मः शङ्कराये च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ उिशामिस कवी रौद्रेणानीकेन पाहि माँ ऽम्ने पिपृहि मा मा

मा हिश्सीः॥ उं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नेत्रयोः स्थाने रुद्राय नमः॥५॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऊं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ अङ्घारिरिस बम्भारी रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऊं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कर्णयोः स्थाने रुद्राय नमः॥६॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऋं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ अवस्युरसि दुवंस्वान् रौद्रेणानींकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। मुखस्थाने रुद्राय नमः॥७॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ऋं। नमं: शम्भवं च मयोभवं च नमं: शङ्करायं च मयस्करायं च नमं: शिवायं च शिवतंराय च॥ शुन्थ्यूरेसि मार्जीलीयो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी:॥ ऋं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कण्ठस्थाने रुद्राय नमः॥८॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ छं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ सम्राडित कृशानू रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हिश्सीः॥ छं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। बाह्वोः स्थाने रुद्राय नमः॥९॥ ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ छं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च॥ परिषद्योऽसि पर्वमानो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा हिश्सीः॥ ॡं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। हृदयस्थाने रुद्राय नमः॥१०॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ एं। नमंः शम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ प्रतक्कांऽसि नभस्वान् रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मा हिश्सीः॥ एं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। नाभिस्थाने रुद्राय नमः॥११॥

ॐ भूर्भुवस्सुवंः।ॐ ऐं। नमंः श्रम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः श्विवायं च शिवतराय च॥ असंम्मृष्टोऽसि हव्यसूदो रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मा हिश्सीः॥ ऐं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। कटिस्थाने रुद्राय नमः॥१२॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ ॐ। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतंराय च॥ ऋतधामाऽसि सुवंज्योंती रौद्रेणानीकेन पाहि मांऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ ॐ ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। ऊरुस्थाने रुद्राय नमः॥१३॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ औं। नमंः श्राम्भवें च मयोभवें च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥ ब्रह्मज्योतिरित्त सुवंर्धामा रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ औं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जानुस्थाने रुद्राय नमः॥१४॥

ॐ भूर्भुवस्सुवं: । ॐ अं। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥
अजौऽस्येकंपाद्रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सी:॥ अं ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। जङ्घास्थाने रुद्राय नमः॥१५॥
ॐ भूर्भुवस्सुवं:।ॐ अः। नमंः शम्भवं च मयोभवं च नमंः शङ्करायं च मयस्करायं च नमंः शिवायं च शिवतराय च॥
अहिरसि बुधियो रौद्रेणानीकेन पाहि माँऽग्ने पिपृहि मा मा मां हिश्सीः॥ अः ॐ भूर्भुवस्सुवरोम्। पादयोः स्थाने रुद्राय नमः॥१६॥

त्वगस्थिगतैः सर्वपापैः प्रमुच्यते। सर्वभूतेष्वपराजितो भवति। ततो भूत-प्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षस-यक्ष-यमदूत-शािकनी-डािकनी-सर्प-श्वापद-वृश्चिक-तस्कराद्यपद्रवाद्यपघाताः। सर्वे ज्वलन्तं पश्यन्तु। मां रक्षन्तु। यजमानं रक्षन्तु। सर्वान् महाजनान् रक्षन्तु॥



॥ गुह्यादि मस्तकान्तं षडङ्ग (चतुर्थो) न्यासः॥

मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञश् सिममं देधातु। या इष्टा उषसौ निम्नुचेश्च ताः सन्देधामि हविषौ घृतेने॥गुह्याय नमः॥१॥ अबौध्यिः सिमधा जनानां प्रति धेनुमिवाऽऽयतीमुषासम्। यह्वा ईव प्रवयामुजिहानाः प्रभानवेः सिस्रते नाकुमच्छे॥ नाभ्यै नमः॥२॥

अग्निर्मूर्द्धा दिवः क्कुत्पितः पृथिव्या अयम्। अपाश्चेताश्चित जिन्वित ॥ हृदयाय नमः ॥३॥ मूर्धानं दिवो अर्तिं पृथिव्या वैश्वानरमृतायं जातम्ग्निम्। क्विश् सम्राजमितिथां जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः॥ कण्ठाय नमः॥४॥

मर्माणि ते वर्मीभेश्छादयामि सोमंस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जर्यन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः॥ मुखाय नमः॥५॥

जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं दर्दद्भ्याववृत्स्व॥ शिरसे नमः॥६॥



॥ आत्मरक्षा ॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - २/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - ११)

ब्रह्मौत्मुन्वद्सृजत। तद्कामयत। समात्मनां पद्येयेति। आत्मुन्नात्मुन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै दशुमश हृतः प्रत्यंशृणोत्। स दश्हृतोऽभवत्। दश्हृतो हु वै नामैषः। तं वा एतं दश्हृतुश् सन्तम्। दशहोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै सप्तमः हृतः प्रत्यंशृणोत्। स सप्तर्हतोऽभवत्। सप्तर्हतो ह वै नामैषः। तं वा एतश सप्तर्हतश सन्तम्। सप्तहोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इ<u>व</u> हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै षष्ठश हृतः प्रत्यंश्रणोत्। स षड्ढंतोऽभवत्। षड्ढंतो ह वै नामेषः। तं वा एतः षड्ढंतः सन्तम्। षड्ढोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामेन्त्रयत। तस्मै पञ्चमश हूतः प्रत्येशृणोत्। स पर्चहृतोऽभवत्। पर्चहृतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पर्चहृतः सन्तम्। पर्ञ्चहोतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ आत्मन्नात्मन्नित्यामन्त्रयत। तस्मै चतुर्थश् हृतः प्रत्येशृणोत्। स चतुर्हतोऽभवत्। चतुर्हतो ह वै नामेषः। तं वा एतं चतुर्हतः सन्तम्। चतुर्होतेत्याचेक्षते परोक्षेण। परोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥ तमंबवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठश हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार इति। तस्मान्नु हैनाङ्श्रतुर्होतार् इत्याचेक्षते। तस्माँच्छुश्रृषुः पुत्राणा हस्यतमः। नेदिष्ठो हस्यतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मणो भवति। य एवं वेद्। आत्मने नमः॥

॥ शिवसङ्कल्पः ॥

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतम्मृतेन सर्वम्। येने यज्ञस्त्रायते सप्तहोता तन्मे मनेः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥१॥

येन कर्माणि प्रचरेन्ति धीरा यतौ वाचा मनेसा चारु यन्ति। यत्सिम्मतमनुसंयन्ति प्राणिनस्तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पर्मस्तु॥२॥ येन कमीण्यपसौ मनीषिणौ यज्ञे कृण्वन्ति विद्थेषु धीराः। यदंपूर्वं यक्षम्नन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३॥ यत्प्रज्ञानेमृत चेतो धृतिश्च यज्योतिरन्तरमृतं प्रजास्। यस्मान्न ऋते किं च न कर्म क्रियते तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥४॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुंभिर्वाजिनं इव। यस्मिनृचः साम् यजूर्ंषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मि इश्चित्तर सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥६॥ यदत्रं षष्ठं त्रिशतर्ं सुवीरं यज्ञस्यं गुह्यं नवनावमाय्यम्। द्शं पञ्च त्रिश्शतं यत्परं च तन्मे मर्नेः शिवसंङ्कल्पर्मस्तु॥७॥ यज्ञार्यतो दूरमुदैति दैवं तदुं सुप्तस्य दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥८॥ येनेदं विश्वं जर्गतो बभूव ये देवापि महतो जातवेदाः। तदेवाग्निस्तर्मसो ज्योतिरेकं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥९॥ येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं च ये पर्वताः प्रदिशो दिशश्च। येनेदं जगद्याप्तं प्रजानां तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥१०॥ ये मेनो हृद्यं ये चं देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरिमः। ते श्रोत्रे चक्षुषी सञ्चरेन्तं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पमस्तु॥११॥

अचिन्त्यं चाप्रमेयं च व्यक्ताव्यक्तपरं च यत्। सूक्ष्मीत्सूक्ष्मतेरं ज्ञेयं तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पमेस्तु॥१२॥

एको च द्रा शतं चे सहस्रं चायुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यंर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्च तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१३॥

ये पश्च पश्चाद्रश शतश सहस्रमयुतं न्यर्बुदं च। ते अग्निचित्येष्टकास्तश् शरीरं तन्मे मर्नः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥१४॥

वेदाृहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनेः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१५॥

यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयौ ब्रह्माणमेतं त्वा वृणत इन्दुम्। स्थावरं जङ्गमं द्यौराका्शं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥१६॥

परौत्परतरं <u>चैव</u> यत्परौचैव यत्परम्। यत्परौत्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः श्विवसङ्कत्पर्मस्तु॥१७॥

परौत्परतेरो <u>ब्रह्मा</u> तत्परौत्परतो हेरिः। तत्परोत्परतोऽधीशास्तन्मे मनेः शिवसङ्कल्पर्मस्तु॥१८॥

या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापी महेश्वरी। ऋग्यर्जुः सामाथर्वैश्च तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥१९॥

यो वै देवं महादेवं प्रणवं पर्मेश्वरम्। यः सर्वे सर्ववेदेश्च तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२०॥ प्रयंतः प्रणंवो<u>ङ्कारं</u> प्रणवं पुरुषोत्तंमम्। ओङ्कारं प्रणंवात्मानं तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२१॥

योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यतै ह्यज इश्वरः। अकायौ निर्गुणो ह्यात्मा तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमंस्तु॥२२॥

गोभिर्जुष्टं धर्नेन ह्यायुंषा च बलेन च। प्रजयां पुशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२३॥

कैलांसिशिखरे रम्ये शुङ्करंस्य शिवालये। देवतास्तत्रं मोदन्ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२४॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमेव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्तन्मे मनः श्विवसंङ्कत्पर्मस्तु॥२५॥

विश्वतंश्रक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सम्बाहुभ्यां नर्माते सम्पतंत्रैर्द्यावापृथिवी जनयन्देव एकस्तन्मे मर्नः श्विवसंङ्कल्पमस्तु॥२६॥

चतुरों वेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं विदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२७॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा ने उक्षितम्। मा नोऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवों रुद्र रीरिषस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥२८॥ मानस्तोके तनेये मा न आर्युषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मन्तो नर्मसा विधेम ते तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥२९॥

> ऋतः सत्यं परं <u>ब्रह्म</u> पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमो नमस्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु॥३०॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मी॒ढुष्टमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तमः हृदे। सर्वो होष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु तन्मे मनः शिवस॑ङ्कल्पमंस्तु॥३१॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौ वेन आवः। सबुधियो उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमस्तिश्च विवस्तन्मे मर्नः शिवसिङ्कल्पमस्तु॥३२॥

यः प्राणितो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो ब्रमूवं। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवार्य हविषां विधेम तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३३॥

य आत्मदा बेलदा यस्य विश्वं उपासंते प्रशिष्ं यस्यं देवाः। यस्यं छायाऽमृतं यस्यं मृत्युः कस्मै देवायं हविषां विधेम् तन्मे मनः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३४॥

यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषंधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमौ अस्तु तन्मे मर्नः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३५॥ गुन्युद्वारां दुराधुरुषां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीई सर्वभूतानां तामिहोपेह्वये श्रियं तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥३६॥ य इदश शिवंसङ्कल्पश् सदाध्यायन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनेः शिवसंङ्कल्पमस्तु॥ हृदयाय नमः॥

॥पुरुषसूक्तम्॥

ॐ सहस्र्रशीर्षा पुर्रुषः। सहस्राक्षः सहस्र्रपात्। स भूमिं विश्वतौ वृत्वा। अत्यतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥ पुर्रुष एवेदश सर्वम्। यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहिति॥ एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायार्श्र्श्य पूर्रुषः।

पादौऽस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्वं उद्दैत्पुर्रुषः। पादौऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वङ्क्षंकामत्। साञ्चानानञ्चने अभि॥ तस्माद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भृमिमथौ पुरः॥

यत्पुरुषेण ह्विषां। देवा यज्ञमतंन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन्परिधर्यः। त्रिः सप्त समिर्धः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबिधन्पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिष् प्रौक्षन्। पुरुषं जातमेग्रतः।

तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्माँ यज्ञात्सर्वेहृतः। सम्भृतं पृषद्गुज्यम्। पुशूशस्ता श्रश्चेके वायुव्यान्। आरुण्यान्याम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहृतः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दार्श्स जिज्ञरे तस्मौत्।

यजुस्तस्मदिजायत॥ तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावौ ह जिज्ञेरे तस्मौत्। तस्मौजाता अजावयः॥ यत्पुरुषं व्यद्धः। कृतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पाद्विच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखमासीत्। बाह्र राजन्यः कृतः। ऊरू तदंस्य यद्वैश्यः। पुन्नाः शूद्रो अंजायत॥ चुन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाप्तिश्ची प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समेवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथो लोकां अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवेर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहारं। शकः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भविति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ यज्ञेनं युज्ञमयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ शिरसे स्वाहा॥

॥उत्तरनारायणम्॥

अन्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टां विद्धंदूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानुमग्रै॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवेर्णं तमेसः परेस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भेवति। नान्यः पन्थां विद्यतेयंऽनाय॥ प्रजापंतिश्वरित गर्भे अन्तः। अजायमानो बहुधा विजायते।

तस्य धीराः परिजानित् योनिम्। मरीचीनां पदिमिच्छन्ति वेधसः॥ यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तदंब्रुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्य देवा असुन् वशे॥ हीश्चं ते लुक्ष्मीश्च पल्यौ। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मनिषाण। अमुं मनिषाण। सर्वं मनिषाण॥

शिखाये वषट्॥



॥ अप्रतिरथम्॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - ४/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - ४)

आ्राः शिशांनो वृष्मो न युध्मो घंनाघनः क्षोभंणश्चर्षणीनाम्। सङ्कन्दंनोऽनिम्ष एकवीरः शतः सेनां अजयत् साकमिन्द्रः। सङ्कन्दंनेनानिमिषेणं जिष्णुनां युत्कारेणं दुश्च्यवनेनं धृष्णुनां। तदिन्द्रेण जयत् तत्संहध्वं युधौ नर् इषुंहस्तेन वृष्णां। स इषुंहस्तैः सनिष्किभिर्वशी सङ्स्रष्टा स युध् इन्द्रौ गुणेनं। सुरसृष्टिजिथ्सोम्पा बाहुशुध्यूर्ध्वधन्वा प्रतिहिताभिरस्तां।

बृहंस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्रार्थं अपुबार्धमानः। प्रभुञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जर्यन्नस्माकंमेध्यविता रथानाम्। गोत्रिभदं गोविदं वर्ज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा। इमश् संजाता अनु वीरयध्विमन्द्रश्रं सखायोऽनु सश् रंभध्वम्। बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः। अभिवीरो अभिसंत्त्वा सहोजा जैत्रीमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्। अभि गोत्राणि सहसा गाहंमानोऽदायो वीरः शतमन्युरिन्द्रः।

दुश्चवनः पृंतनाषाडंयुध्यौऽस्माक्ः सेनां अवतु प्र युत्सु। इन्द्रं आसां नेता बृह्स्यितिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः। देवसेनानामिभअतीनां जयन्तीनां मरुतौ यन्त्वग्रै। इन्द्रंस्य वृष्णो वर्रुणस्य राज्ञं आदित्यानां मरुताः शर्धं उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदंस्थात्। अस्माक्मिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु।

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्मानं देवा अवता हवेषु। उद्धेर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्त्वनां मामकानां महा हिस्। उद्घंत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतामेतु घोषः। उप प्रेत जयता नरः स्थिरा वः सन्तु बाहवः। इन्द्रौ वः शर्म यच्छत्त्वनाधृष्या यथाऽस्थ। अवसृष्टा पर्रा पत शर्रव्ये ब्रह्मस्शिता।

गच्छामित्रान् प्रविद्या मैषां कं चनोच्छिषः। मर्माणि ते वर्मीभिश्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनाभिवस्ताम्। उरोर्वरीयो वरिवस्ते अस्तु जयन्तं त्वामनुं मदन्तु देवाः। यत्रं बाणाः सम्पतिन्त कुमारा विद्याखा ईव। इन्द्रौ नुस्तत्रं वृत्रहा विश्वाहा शर्मं यच्छतु॥ कवचाय हुम्॥

॥ प्रतिपूरुषम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ८/अनुवाकः - ६)

प्रतिपूरुषमेकंकपालान्निर्वपत्येकमितिरिक्तं यावेन्तो गृह्याः समस्तेभ्यः कर्मकरं पश्चनाः शर्मासि शर्म यजमानस्य शर्म मे यच्छैकं एव रुद्रो न द्वितीयाय तस्थ आखुस्ते रुद्र पशुस्तं जुंषस्वैष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकया तं जुंषस्व भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजमथो अस्मभ्यं भेषजः सुभेषजं यथाऽसित। सुगं मेषाय मेष्या अवाम्ब रुद्रमिद्मह्यवं देवं त्र्यम्बकम्। यथा नः श्रेयसः कर्द्यथां नो वस्यसः कर्द्यथां नः पशुमतः कर्द्यथां नो व्यवसाययात्। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धं पृष्टिवधनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनानमृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ एष ते रुद्रभागस्तं जुंषस्व तेनावसेनं परो मूजवतोऽतीह्यवंततधन्वा पिनाकहस्तः कृत्तिवासाः॥

॥ प्रतिपूरुषम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे अष्टकं - १/प्रश्नः - ६/अनुवाकः - १०)

प्रतिपूरुषमेकेकपालान्निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एकमितिरिक्तम्। जिन्ष्यमीणा एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते। एककपाला भवन्ति। एकधैव रुद्रं निरवंदयते। नाभिघारयति। यदिभिघारयैत्। अन्तरवचारिणई रुद्रं कुर्यात्। एकोल्मुकेन यन्ति। तिद्ध रुद्रस्यं भागधेयम्। इमां दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायमिव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपुशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत। असौ ते पशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टि। तमस्मै पशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आंखुस्ते पशुरिति ब्र्यात्। न ग्राम्यान् परान् हिनस्ति। नऽऽरण्यान्। चतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां पङ्कीशो नाम। अग्निवत्येव जुहोति। मध्यमेन पर्णेन जुहोति। सुग्घ्येषा। अथो खर्छु। अन्तमेनैव हौतव्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंद्यते। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिकयेत्याह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसा। तया वा एष हिनस्ति। यश हिनस्ति। तयैवैन सह शमयति। भेषजं गव इत्यहि। यार्वन्त एवं ग्राम्याः पशवंः। तेभ्यौ भेषजं करोति। अवाम्ब रुद्रमदिमहीत्याह। ञाशिषमेवैतामाशास्ति। त्र्यम्बकं यजामह इत्यहि। मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतादिति वावैतद्वि। उत्किरन्ति। भगस्य लीप्सन्ते। मूर्ते कृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेऽवसं करोति। ताहगेव तत्। एष ते रुद्र भाग इत्योह निरवत्यै। अप्रतीक्षमायन्ति। अपः परिषिञ्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्रवा एतेंस्माल्लोकाच्यवन्ते। ये त्र्यम्बकैश्चरन्ति। आदित्यं चरुं पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति।

नेत्रत्रयाय वौषट्॥



॥ शतरुद्रीयम् (सं०)॥

(तैत्तिरीयसंहितायां काण्डः - १/प्रश्नः - ३/अनुवाकः - १४)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस्त्व शर्धों मारुतं पृक्ष ईिशिषे। त्वं वातेररुणेर्यांसि शङ्मयस्त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मनां। आ वो राजानमध्वरस्यं रुद्र होतार सत्ययज् रोदंस्योः। अग्निं पुरा तनियलोर्चित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्। अग्निर्होता नि षसादा यजीयानुपस्थे मातुः सुरुभावुं लोके। युवां कविः पुरुनिष्ठ ऋतावां धर्तां कृष्टीनामुत मध्यं इद्धः।

साध्वीमंकर्द्ववीतिं नो अद्य युज्ञस्यं जिह्वामंविदाम् गुह्याम्। स आयुराऽगात्सुर्भिर्वसानो भद्रामंकर्द्देवहृतिं नो अद्य। अक्रन्दद्गिः स्तनयन्तिव द्योः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समुञ्जन्न। सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदंसी भानुनां भात्यन्तः। त्वे वसूनि पुर्वणीक होतर्दोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियांसः।

क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन्त्सः सौभंगानि दिधरे पविके। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम् विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामाय येमिरे। अश्याम् तं काममग्ने तवोत्यंश्यामं रियः रियवः सुवीरम्। अश्याम् वाजमाभि वाजयन्तोऽश्यामं सुम्नमंजराऽजरेन्ते। श्रेष्ठं यविष्ठ भारताऽग्ने सुमन्तमा भर।

वसौ पुरुस्पृह र्रे र्यिम्। स श्वितानस्तन्यत् रौचनस्था अजरेभिर्नानदद्भिर्यविष्ठः। यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरंनुयाति भर्वन्नं। आयुष्टे विश्वतौ दधद्यम्गिन्नवरिण्यः। पुनस्ते प्राण आयिति परा यक्ष्मर्रं सुवामि ते। आयुर्दा अग्ने ह्विषौ जुषाणो घृतप्रतीको घृतयौनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गर्व्यं पितेव

पुत्रमुभिर्रक्षतादिमम्।

तस्मै ते प्रतिहर्यते जातंवदो विचर्षणे। असे जनांमि सुष्टुतिम्। दिवस्परि प्रथमं जंज्ञे अग्निर्समिद्वितीयं परि जातवेदाः। तृतीयंमप्सु नृमणा अजंस्त्रमिन्यांन एनं जरते स्वाधीः। शुचिः पावक् वन्द्योऽसे बृहद्विरोचसे। त्वं घृतेभिराह्वतः। दृशानो रुका उर्व्या व्यंद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः। अग्निर्मृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः।

आ यदिषे नृपतिं तेज आन्द्वृचि रेतो निर्षिक्तं द्यौर्भीकैं। अग्निः शर्धमनवद्यं युवानङ् स्वाधियं जनयत्सूदयंच। स तेजीयसा मनसा त्वोतं उत शिक्ष स्वपत्यस्यं शिक्षोः। अग्ने रायो नृतंमस्य प्रभूतौ भूयामं ते सुष्टुतयंश्च वस्वः। अग्ने सहन्तमा भर द्युम्नस्यं प्रासहां रियम्।

विश्वा यश्चर्षणीर्भ्यांसा वाजेषु सासहित्। तमेग्ने पृतना सह रे र्यिश् संहस्व आ भेर। त्वश् हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजेस्य गोमेतः। उक्षान्नाय वशान्नाय सोमेपृष्ठाय वेधसै। स्तोमैर्विधेमाग्नयै। वद्मा हि सूनो अस्यद्मसद्वां चक्रे अग्निर्जनुषाऽज्माऽन्नम्। स त्वं नं ऊर्जसन् ऊर्जं धा राजेव जेरवृके क्षेष्यन्तः।

अग्न आयू हैषि पवस आ सुवोर्जिमषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनाम्। अग्ने पर्वस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। द्धत्पोष है रियं मियं। अग्ने पावक रोचिषां मन्द्रयां देव जिह्नया। आ देवान् विक्ष यिक्षं च। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवा इहऽऽवह। उप युज्ञ हिवश्चं नः। अग्निः शुचिं व्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः। शुचीं रोचत् आहुंतः। उद्गे शुचंयस्तवं शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योती हुंष्युर्चयः॥

॥ शतरुद्रीयम् (ब्रा०)॥

(तैत्तिरीयब्राह्मणे काठके प्रश्नः - २/अनुवाकः - २)

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्वश रार्धो मारुतं पृक्ष ईिराषे। त्वं वातैररुणैयाँसि शङ्गयः। त्वं पूषा विधतः पासि नु त्मना। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चुतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पुञ्चमाः षुष्ठेषु श्रयध्वम्॥ षुष्ठाः सप्तमेषु श्रयध्वम्। सप्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नवमेषुं श्रयध्वम्। नवमा देशमेषुं श्रयध्वम्। दशमा एंकादशेषुं श्रयध्वम्। एकादशा द्वांदशेषुं श्रयध्वम्। द्वादशास्त्रयोदशेषु श्रयध्वम्। त्रयोदशाश्चेतुर्देशेषु श्रयध्वम्। चतुर्दशाः पेञ्चदशेषु श्रयध्वम्। पञ्चदशाः षौडशेषु श्रयध्वम्॥ षोडशाः सप्तदशेषु श्रयध्वम्। सप्तदशा अष्टादशेषु श्रयध्वम्। अष्टादशा एकान्नविश्शेषु श्रयध्वम्। एकान्नविश्शा विश्रोषु श्रयध्वम्। विश्रा एकविश्रोषु श्रयध्वम्। एकविश्रा द्वविश्रोषु श्रयध्वम्। द्वाविश्रास्त्रयोविश्रोषु श्रयध्वम्। त्रयोविश्शाश्चेतुर्विश्शेषु श्रयध्वम्। चतुर्विश्शाः पञ्चविश्शेषु श्रयध्वम्। पञ्चविश्वाः षेड्विश्वोषुं श्रयध्वम्॥ षड्विश्वाः संप्तविश्रोषुं श्रयध्वम्। सप्तविश्रा अष्टाविश्रोषुं श्रयध्वम्।

अष्टाविश्वा एकान्नित्रश्वेषु अयध्वम्। एकान्नित्रिश्वोषुं अयध्वम्। त्रिश्वा एकित्रिश्वोषुं अयध्वम्। एकित्रिश्वा ह्यात्रिश्वेषुं अयध्वम्। एकित्रिश्वा ह्यात्रिश्वेषुं अयध्वम्। ह्यात्रिश्वेष्वास्त्रियस्त्रिश्वोषुं अयध्वम्। देवास्त्रिरेकाद्यास्त्रिस्त्र्यस्त्रिश्वाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्वानः। यत्काम इदं जुहोमि। तन्मे समृध्यताम्। वयश् स्याम् पत्तयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहा॥ अस्त्राय फट्॥

॥पञ्चाङ्गम्॥

ह्रसः श्रुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदितसद्योमसद्बा गोजा ऋतजा अद्विजा ऋतं बृहत्॥

प्रतिद्वर्णाः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवधीनम्। उर्वारुकमिव बन्धीनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्॥

तत्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजनम्। श्रेष्ठश्रं सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि॥

विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टां रूपाणि पिश्शतु। आसिञ्चतु प्रजापंतिः। धाता गर्भं दधातु ते॥

॥ अष्टाङ्ग-नमस्काराः॥

हिरण्यगर्भः समेवर्तताय्रे भूतस्यं जातः पितरेकं आसीत्। सद्यंधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवायं हिवर्षा विधेम॥ [उरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥१॥

यः प्राणितो निमिष्तो मिहित्वैक इद्राजा जगेतो बभूवे। य ईशे अस्य द्विपद्श्वतुष्पदः कस्मै देवायं हविषां विधेम॥ [शिरसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥२॥

ब्रह्मजज्ञानं प्रेथमं पुरस्ताद्विसीमृतः सुरुचौ वेन ओवः। सबुध्नियो उपमा अस्य विष्ठाः सृतश्च योनिमसंतश्च विवेः॥१॥ [दृष्ट्या] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥३॥

मही द्यौः पृथिवी चं न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमिभः॥ [मनसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥४॥

उपेश्वासय पृथिवीमुत द्यां पुंरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जर्गत्। स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अपेसेघ रात्रून्॥ [वचसा] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥५॥

अम्ने नयं सुपर्था राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनािन विद्वान्। युयोध्यस्मर्ज्जुहराणमेनो भूयिष्ठां ते नमं उक्तिं विधेम॥ [पद्माम] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥६॥

या ते अग्ने रुद्रिया तुनूस्तयां नः पाहि तस्यास्ते स्वाहा॥ [कराभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥७॥

इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्राः कविशास्ता वेहन्त्वेना राजन् ह्विषां मादयस्व॥ [कर्णाभ्याम्] उमामहेश्वराभ्यां नमः॥८॥

॥ लघुन्यासे श्री रुद्रध्यानम्॥

अथऽऽत्मानं शिवात्मानं श्री रुद्र रूपं ध्यायेत्॥ शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवऋकम्। गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम्॥ नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम्। व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम्॥ कमण्डल्वक्षसूत्राणां धारिणं शूलपाणिनम्। ज्वलन्तं पिङ्गलजटाशिखामुद्योतधारिणम्॥ वृषस्कन्धसमारूढम् उमादेहार्घधारिणम्। अमृते नाष्ट्रतं शान्तं दिव्यभोगसमन्वितम्॥ दिग्देवता समायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम्। नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥ सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम्। एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत्॥ अथातो रुद्र स्नानार्चनाभिषेकविधिं व्याख्यास्यामः। आदित एव तीर्थे स्नात्वा उदेत्य शुचिः प्रयतो ब्रह्मचारी शुक्कवासा ईशानस्य प्रतिकृतिं कृत्वा तस्य दक्षिणप्रत्यग्देशे देवाभिमुखः स्थित्वा आत्मनि देवताः स्थापयेत्॥

॥ लघुन्यासे देवता-स्थापनम्॥

प्रजनने ब्रह्मा तिष्ठतु। पादयोर्विष्णुस्तिष्ठतु। हस्तयोर्हरस्तिष्ठतु। बाह्वोरिन्द्रस्तिष्ठतु। जठरे अग्निस्तिष्ठतु। हृदये शिवस्तिष्ठतु। कण्ठे वसवस्तिष्ठन्तु। वक्रे सरस्वती तिष्ठतु। नासिकयोर्वायुस्तिष्ठतु। नयनयोश्चन्द्रादित्यौ तिष्ठेताम्। कर्णयोरिश्वनौ तिष्ठेताम्। ललाटे रुद्रास्तिष्ठन्तु। मूर्झ्यादित्यास्तिष्ठन्तु। शिरसि महादेवस्तिष्ठतु। शिखायां वामदेवस्तिष्ठतु। पृष्ठे पिनाकी तिष्ठतु। पुरतः शूली तिष्ठतु। पार्श्वयोः शिवाशङ्करौ तिष्ठेताम्। सर्वतो वायुस्तिष्ठतु। ततो बिहः सर्वतोऽग्निर्ज्वालामाला-परिवृतस्तिष्ठतु। सर्वेष्वङ्गेषु सर्वा देवता यथास्थानं तिष्ठन्तु। मां रक्षन्तु। [सर्वान् महाजनान् सकुटुम्बं रक्षन्तु॥]

अग्निमें वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृद्यं मियं। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (जिह्ना)

वायुमें प्राणे श्रितः। प्राणो हद्ये। हद्यं मयि। अहम्मृते। अमृतं ब्रह्मणि। (नासिका)

सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः। चक्षुर्हदंये। हदंयं मियं। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (नेत्रे)

चन्द्रमा मे मनिसि श्रितः। मनो हद्ये। हद्यं मिय। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (वक्षः) दिशों में श्रोत्रें श्रिताः। श्रोत्र<u>*</u> हद्ये। हद्यं मिय। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। (श्रोत्रे)

आपौ मे रेतिसि श्रिताः। रेतो हृद्ये। हृद्यं मिय। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (गुह्मम्)

पृथिवी मे शरीरे श्रिता। शरीर् हद्ये। हद्यं मिय। अहममृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (शरीरम्)

ओषधिवनस्पतयौ में लोमेसु श्रिताः। लोमिनि हृद्ये। हृद्यं मिय। अहमुमृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (लोमानि)

इन्द्रौ मे बले श्रितः। बल्र हृद्ये। हृद्यं मिय। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (बाहू)

पुर्जन्यों में मूर्धि श्रितः। मूर्घा हृद्ये। हृद्यं मिये। अहमुमृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (शिरः)

ईशांनो मे मन्यौ श्रितः। मन्युर्हद्ये। हृद्यं मियं। अहम्मृतौ। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

आत्मा में आत्मिन श्रितः। आत्मा हृदये। हृद्यं मिये। अहम्मृतै। अमृतं ब्रह्मणि। (हृदयम्)

पुर्नर्म आत्मा पुनरायुरागात्। पुर्नः प्राणः पुनराकृतमागात्। वैश्वानरो रिक्मिर्मावृधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतस्य गोपाः॥ (सर्वाण्यङ्गानि संस्पृश्य स्थापनं कृत्वा मानसैराराधयेत्॥)

॥ कलशेषु साम्बपरमेश्वर ध्यानम्॥

॥ षोडशोपचार पूजा॥

॥श्रीरुद्रनाम त्रिशती॥

नमो हिर्रण्यबाहवे नर्मः। सेनान्ये नर्मः। दिशां च पत्ये नमः। नमौ वृक्षेभ्यो नमः। हरिकेशेभ्यो नर्मः। पुशूनां पत्ये नर्मः। नर्मः सस्पिञ्जराय नर्मः। त्विषीमते नर्मः। पथीनां पतेये नर्मः। नर्मो बभ्लुशाय नर्मः। विव्याधिने नर्मः। अन्नानां पर्तये नर्मः। नमो हरिकेशाय नर्मः। उपवीतिने नर्मः। पुष्टानां पतेये नमः। नमौ भवस्य हेत्यै नमः। आतताविने नर्मः। क्षेत्राणां पर्तये नर्मः। नमः सूताय नमः। अहन्त्याय नमः। वनानां पत्ये नमः। नमो रोहिताय नमः। स्थपतंये नर्मः। वृक्षाणां पतंये नर्मः। नमों मन्त्रिणे नर्मः। वाणिजाय नर्मः। कक्षाणां पत्ये नर्मः। नर्मो भुवन्तये नर्मः। वारिवस्कृताय नर्मः। ओषंधीनां पर्तये नर्मः। नमं उच्चैघोँ षाय नमः। आकृन्दयंते नमः। पत्तीनां पत्तेये नमः। नमः कृत्स्नवीताय नमः। धावते नमः। सत्त्वेनां पत्तेये नमः॥

नमः सहमानाय नमः। निव्याधिने नमः। आव्याधिनीनां पत्ये नर्मः। नर्मः ककुभाय नर्मः। निषङ्गिणे नर्मः। स्तेनानां पतये नर्मः। नमो निषङ्गिणे नमः। इषुधिमते नमः। तस्कराणां पत्रये नर्मः। नमो वर्चते नर्मः। परिवर्ञ्चते नर्मः। स्तायूनां पत्तेये नर्मः। नमौ निचेरवे नर्मः। परिचराय नर्मः। अर्ण्यानां पत्ये नर्मः। नर्मः सुकाविभ्यो नर्मः। जिघा रसझो नर्मः। मुष्णतां पतेये नर्मः। नमोऽसिमच्यो नर्मः। नक्तं चर्रच्यो नर्मः। प्रकृन्तानां पतेये नर्मः। नर्म उष्णीषिने नर्मः। गिरिचराय नर्मः। कुलुञ्चानां पर्तये नर्मः। नम इषुमद्भो नर्मः। धन्वाविभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं आतन्वानेभ्यो नर्मः। प्रतिद्धानिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं आयच्छंन्यो नमः। विसृजन्यंश्च नमः। वो नमः। नमोऽस्यद्यो नर्मः। विध्यद्मश्च नर्मः। वो नर्मः। नम आसीनेभ्यो नर्मः। शयनिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः स्वपद्यो नर्मः। जाग्रद्मश्च नर्मः। वो नर्मः।

नमस्तिष्ठे द्यो नर्मः। धार्वद्मश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः सभाभ्यो नर्मः। सभापतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो अश्वैभ्यो नर्मः। अश्वेपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमं आव्याधिनीभ्यो नमः। विविध्यन्तीभ्यश्च नमः। नर्मः। नम् उर्गणाभ्यो नर्मः। तृश्हृतीभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ गृत्सेभ्यो नर्मः। गृत्सपितिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो व्रातेभ्यो नमः। व्रातंपतिभ्यश्च नमः। वो नमः। नमौ गणेभ्यो नर्मः। गणपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो विरूपेभ्यो नर्मः। विश्वरूपेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ महज्यो नर्मः। क्षुल्लकेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमौ रथिभ्यो नर्मः। अरथेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमो रथैभ्यो नर्मः। रथंपतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः सेनाभ्यो नर्मः। सेनानिभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः क्षत्तृभ्यो नर्मः। सङ्ग्रहीतृभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमस्तक्षभ्यो नर्मः। रथकारेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः कुललिभ्यो नर्मः। कर्मारैभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नर्मः पुञ्जिष्टैभ्यो नर्मः। निषादेभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः। नमं इषुकृद्यो नमः। धन्वकृद्यश्च नमः। वो नमः। नमौ मृगयुभ्यो नर्मः। श्वनिभ्यंश्च नर्मः। वो नर्मः। नमः श्वभ्यो नर्मः। श्वपंतिभ्यश्च नर्मः। वो नर्मः॥

नमौ भवायं च नर्मः। रुद्रायं च नर्मः। नमः शर्वायं च नमः। पुशुपत्ये च नमः। नमो नीलंग्रीवाय च नर्मः। शितिकण्ठाय च नर्मः। नमः कपर्दिने च नमः। व्युप्तकेशाय च नमः। नर्मः सहस्राक्षायं च नर्मः। शतधन्वने च नर्मः। नमों गिरिशायं च नमंः। शिपिविष्टायं च नमंः। नमौ मीढुप्टमाय च नमः। इषुमते च नमः। नमौ हस्वायं च नर्मः। वामनायं च नर्मः। नमों बृहते च नर्मः। वर्षी यसे च नर्मः। नमो वृद्धायं च नमः। संवृध्वने च नमः। नमो अग्रियाय च नर्मः। प्रथमायं च नर्मः। नमं आशवें च नमः। अजिरायं च नमः। नमः शीघ्रियाय च नमः। शीभ्याय च नमः। नमं अम्यीय च नर्मः। अवस्वन्याय च नर्मः। नर्मः स्त्रोतस्याय च नर्मः। द्वीप्याय च नर्मः॥

नमौ ज्येष्ठायं च नमः। कृतिष्ठायं च नमः। नमः पूर्वजायं च नमः। अपरजायं च नमः। नमो मध्यमायं च नमः। अपगुल्भायं च नमः। नमौ जघन्याय च नमः। बुधियाय च नमः। नमः सोभ्याय च नमः। प्रतिस्याय च नमः। नमो याम्याय च नमः। क्षेम्याय च नमः। नमं उर्व्याय च नमः। खत्याय च नमः।
नमः श्लोक्याय च नमः। अवसान्याय च नमः।
नमो वन्याय च नमः। कक्ष्याय च नमः।
नमः श्रवायं च नमः। प्रतिश्रवायं च नमः।
नमं आशुषेणाय च नमः। आशुरंथाय च नमः।
नमः शूराय च नमः। अविभन्दते च नमः।
नमो वर्मिणे च नमः। वर्ष्यिने च नमः।
नमो वित्मिने च नमः। क्वचिने च नमः।
नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतस्नायं च नमः।
नमः श्रुतायं च नमः। श्रुतस्नायं च नमः॥

नमों दुन्दुभ्याय च नमः। आह्नन्याय च नमः।
नमों धृष्णवे च नमः। प्रमृशायं च नमः।
नमों दूतायं च नमः। प्रहिताय च नमः।
नमों निष्किणे च नमः। इषुधिमते च नमः।
नमस्तीक्ष्णेषवे च नमः। आयुधिने च नमः।
नमः स्वायुधायं च नमः। सुधन्वने च नमः।
नमः सुत्याय च नमः। पथ्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। नीप्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। सरस्याय च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। खेशुन्तायं च नमः।
नमः सूद्याय च नमः। अवुद्याय च नमः।
नमः कूप्याय च नमः। अवुद्याय च नमः।
नमः कूप्याय च नमः।

नमों मेघ्याय च नमः। विद्युत्याय च नमः। नमं ईध्रियाय च नमः। आतुप्याय च नमः। नमो वात्याय च नमः। रेष्मियाय च नमः। नमो वास्तुव्याय च नमः। वास्तुपायं च नमः॥

नमः सोमाय च नमः। रुद्रायं च नमः। नर्मस्ताम्रायं च नर्मः। अरुणायं च नर्मः। नमः शुङ्गायं च नमः। पुशुपतये च नमः। नमं उग्रायं च नमः। भीमायं च नमः। नमौ अग्रेवधार्यं च नर्मः। दूरेवधार्यं च नर्मः। नमौ हन्त्रे च नर्मः। हनीयसे च नर्मः। नमों वृक्षेभ्यो नमः। हरिकेशेभ्यो नमः। नर्मस्ताराय नर्मः। नर्मः शम्भवे च नर्मः। मयोभवें च नर्मः। नर्मः शङ्करायं च नर्मः। मयस्करायं च नर्मः। नर्मः शिवायं च नर्मः। शिवतराय च नमः। नमस्तीर्थ्याय च नमः। कूल्याय च नर्मः। नर्मः पार्याय च नर्मः। अवायीय च नर्मः। नर्मः प्रतरंणाय च नर्मः। उत्तरंणाय च नर्मः। नर्म आतार्याय च नर्मः। आलाद्याय च नर्मः। नमः शष्याय च नर्मः। फेन्याय च नर्मः। नर्मः सिकत्याय च नर्मः। प्रवाह्याय च नर्मः॥

नमं इरिण्याय च नमः। प्रपथ्याय च नमः। नर्मः किश्शिलायं च नर्मः। क्षयंणाय च नर्मः। नर्मः कपर्दिने च नर्मः। पुलुस्तये च नर्मः। नमो गोष्ट्याय च नमः। गृह्याय च नमः। नमस्तल्प्याय च नर्मः। गेह्याय च नर्मः। नर्मः काट्याय च नर्मः। गह्ररेष्ठायं च नर्मः। नमौ हदय्याय च नमः। निवेष्याय च नमः। नर्मः पाश्सव्याय च नर्मः। रजस्याय च नर्मः। नमः शुष्क्याय च नर्मः। हरित्याय च नर्मः। नमो लोप्याय च नर्मः। उलप्याय च नर्मः। नमं ऊर्व्याय च नमः। सूम्यीय च नमः। नर्मः पर्ण्याय च नर्मः। पर्णश्चाय च नर्मः। नमोऽपगुरमाणाय च नर्मः। अभिघ्नते च नर्मः। नमं आख्विदते च नमः। प्रिख्विदते च नमः। नमों वो नमः। किरिकेभ्यो नर्मः। देवाना हदयभ्यो नर्मः। नमों विक्षीणकेभ्यो नर्मः। नमों विचिन्वत्केभ्यो नर्मः। नम् आनिर्हतेभ्यो नमः। नम् आमीवत्केभ्यो नमः।

॥ प्रदक्षिणम्॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिद्रन्नीलेलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽममत्॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्य भेषजी तयां नो मृड जीवसै॥ इमा र रुद्रायं तवसं कपर्दिनं क्षयद्वीराय प्रभरामहे मृतिम्॥ यथा रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मर्नुरायुजे पिता तद्श्याम् तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नौ महान्तमुत मा नौ अर्भकं मा न उक्षेन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नेस्तनुवौ रुद्र रीरिषः॥ मा नस्तोके तनेये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघे क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रुह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तर्वानो अन्यन्ते अस्मन्निवंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्यस्तनुष्व मीर्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीढुंष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गंहि॥ विकिरिद विलौहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रई हेतयोऽन्यमुस्मन्निवंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतर्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि॥ प्रदक्षिणं कृत्वा॥



॥नमस्काराः॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१॥ अस्मिन् महत्यर्णवैऽन्तरिक्षे भवा अधि। तेषार् सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥२॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षेमाचराः। तेषार्थ सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥३॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिवर्रं रुद्रा उपेश्रिताः। तेषार्रं सहस्रयोजनेऽवधन्वांनि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥४॥ ये वृक्षेषुं सुस्पिञ्जरा नीलंग्रीवा विलोहिताः। तेषार् सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥५॥ ये भूतानामधिपतयो विश्वाखासः कपर्दिनः। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥६॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबंतो जनान्। तेषा सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥७॥ ये पथां पंथिरक्षय ऐलबृदा यव्युर्धः। तेषार् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥८॥

ये तीर्थानि प्रचर्रन्ति सृकावन्तो निषक्षिणः। तेषार् सहस्रयोजने-ऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥९॥

य एतावन्तश्च भूयार्श्सश्च दिशौ रुद्रा वितस्थिरे। तेषार्श् सहस्रयोजनेऽवधन्वानि तन्मसि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१०॥

नमी रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्निमष्वस्तेभ्यो दश प्राचीर्दर्श दक्षिणा दर्श प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नौ मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥११॥

नमां रुद्रेभ्यो यैंऽन्तरिक्षे येषां वात इषवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दर्श प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नमस्ते नों मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१२॥

नमों रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषंवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदींचीर्दशोर्ध्वास्तेभ्यो नमस्ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्भे दधामि। श्री महादेवादिभ्यो नमः॥१३॥

नमस्कारान् कृत्वा॥



॥ चमकानुवाकैः प्रार्थना॥

अग्नविष्णू स्जोषसेमा वर्धन्तु वां गिरंः। युग्नैर्वाजेभिरागंतम्॥ वाजिश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कर्तृश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसृश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वाकं मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजिश्च मे सहश्च म आयुश्च मे जरा चं म आत्मा चं मे तुनृश्चं मे शर्मं च मे वमें च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्यैष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्श्च मे जेमा च मे मिहुमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सृत्यं च मे श्रद्धा च मे जग्नच मे धनं च मे वर्शश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोद्श्च मे जातं च मे जिन्ष्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे ऋ्तं च मे क्षृतिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमनसर्श्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्जाश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में सांविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्र में प्रसूर्श्र में सीरं च में लयश्रं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्र में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में रायंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में॥३॥ ऊकी मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्चं मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्भिद्यं च मे र्यिश्चं मे रायश्च मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूर्यवाश्च मेऽत्रं च मेऽक्षंच मे त्रीहर्यश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियक्षंवश्च मेऽणवश्च मे श्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्व में पर्वताश्व में सिर्कताश्व में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च मेऽयश्च में सीसं च में त्रपृश्च में रयामं च में लोहं चे मेऽग्निश्चं म आपेश्च में वीरुर्घश्च म ओषंघयश्च में कृष्टपच्यं र्च मेऽकृष्टपुच्यं चे मे ग्राम्याश्चे मे पशर्व आरण्याश्चे यज्ञेन कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं च में भूतिश्च में वसुं च में वस्तिश्च में कमें च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च मु एमश्च मु इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥ अग्निर्श्व म इन्द्रिश्च मे सोमश्च म इन्द्रिश्च मे सिवता च म इन्द्रिश्च मे सरस्वती च म इन्द्रेश्च मे पूषा च म इन्द्रेश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रेश्च में मित्रश्चं म इन्द्रंश्च में वर्रुणश्च म इन्द्रंश्च में त्वष्टां च म इन्द्रंश्च मे धाता च म इन्द्रेश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रेश्च मेऽिधनौ च म इन्द्रेश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रंश्च में विश्वें च में देवा इन्द्रंश्च में पृथिवी चं म इन्द्रंश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रेश्च मे चौर्श्व म इन्द्रेश्च मे दिशंश्व म इन्द्रेश्च मे

अ॰्र्युश्चं मे र्िरमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपा॰्र्युश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुकश्च मे मन्थी चं म आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऋतुग्रहाश्च मेऽतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे वैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्च म आदित्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पौष्णश्च मे पालीवतश्च मे हारियोजनश्च मे॥७॥ इध्मश्च मे बहिश्च मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्त्रचंश्च मे चमसाश्च मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्च मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलुशश्च मे वाय्व्यानि च मे पूत्भृच्च म आध्वनीयश्च म आग्नीधं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्च मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे॥८॥

अग्निश्चं में घर्मश्चं में ऽर्कश्चं में सूर्यश्च में प्राणश्चं में ऽश्वमेंधश्चं में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्चं में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चंश्च में यज्ञेन कल्पन्तामृकं में सामं च में स्तोमश्च में यज्ञेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्चं में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवा चं मे दित्योही चं मे पञ्चाविश्व मे पञ्चावी चं मे त्रिवत्सर्श्च मे त्रिवत्सा चं मे तुर्यवा चं मे तुर्योही चं मे पष्टवा चं मे पष्टवा चं मे प्रश्नेही चं म उक्षा चं मे व्वशा चं म ऋष्मश्च मे वेह चं मेऽनु इं चं मे धेनुश्च म आयुर्य झेने कल्पतां प्राणो यझेने कल्पतामपानो यझेने कल्पतां च्यानो यझेने कल्पतां चश्चर्य झेने कल्पतां चश्चर्य में कल्पतां चश्चर्य केने कल्पतां वाग्यझेने कल्पतां यझेने कल्पतां वाग्यझेने कल्पतां यझेने कल्पतां वाग्यझेने कल्पतामात्मा यझेने कल्पतां यझो यझेने कल्पतां वाग्यझेने कल्पतामात्मा एकोने कल्पतामा १०॥

एकां च में तिस्तर्श्च में पर्ञ्च च में स्प्तर्त्व च में नवं च में पर्ञ्चद्दा च में त्रयादा च में पर्ञ्चद्दा च में स्प्तर्द्दा च में पर्ञ्चविश्वातिश्च में पर्ञ्चविश्वातिश्च में पर्ञ्चविश्वातिश्च में पर्ञ्चविश्वातिश्च में स्प्तिविश्वातिश्च में नवंविश्वातिश्च में एकित्रिश्वाच में त्रयस्त्रिश्च में चतंस्त्रश्च में उद्योविश्वातिश्च में द्वाद्वातिश्च में द्वादिश्वातिश्च में द्वादिश्वातिश्च में द्वादिश्वाच में विश्वातिश्च में चत्वारिश्वाच में चतंश्वादिश्वाच में चतंश्वाच में चतंश्वादिश्वाच में चतंश्वाच में चतंश्वच चतंश्वच में चतंश्वच में चतंश्वच में चतंश्वच में चतंश्वच में चतंश्

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥

इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिरुक्थामदानि शश्सिष्दिश्चेदेवाः सूक्तवाचः पृथिवि मात्रमा मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं वदिष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ तत्पुरुषाय विदाहे महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ तत्पुरुषाय विदाहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयात्॥ (दशवारं जपेत्।)

महादेवादिभ्यो नमः॥ समस्तोपचारान् समर्पयामि॥



॥ प्रार्थना ॥



॥श्रीरुद्रजपः॥

अस्य श्री रुद्राध्याय-प्रश्न-महामन्त्रस्य। अघोर ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। सङ्कर्षणमूर्तिस्वरूपो योऽसावादित्यः परमपुरुषः स एष रुद्रो देवता॥

नमः शिवायेति बीजम्। शिवतरायेति शक्तिः। महादेवायेति कीलकम्। श्री साम्बसदाशिवप्रसादसिख्यर्थे जपे विनियोगः॥

॥ करन्यासः॥

ॐ अग्निहोत्रात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। दर्शपूर्णमासात्मने तर्जनीभ्यां नमः। चातुर्मास्यात्मने मध्यमाभ्यां नमः। निरूढपशुबन्धात्मने अनामिकाभ्यां नमः। ज्योतिष्टोमात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सर्वक्रत्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

॥ अङ्गन्यासः ॥

अग्निहोत्रात्मने हृदयाय नमः। दर्शपूर्णमासात्मने शिरसे स्वाहा। चातुर्मास्यात्मने शिखाये वषट्। निरूढपशुबन्धात्मने कवचाय हुं। ज्योतिष्टोमात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्। सर्वकत्वात्मने अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः।

॥ध्यानम्॥

आपाताल-नभः-स्थलान्त-भुवन-ब्रह्माण्डमाविस्फुरत् ज्योतिः स्फाटिक-लिङ्ग-मौलि-विलसत्-पूर्णेन्दु-वान्तामृतैः। अस्तोकाप्नुतमेकमीशमनिशं रुद्रानुवाकान् जपन् ध्यायेदीप्सितसिद्धये ध्रुवपदं विप्रोऽभिषिञ्चेच्छिवम्॥

ब्रह्माण्ड-व्याप्त-देहा भिसत-हिमरुचा भासमाना भुजङ्गैः कण्ठे कालाः कपर्दा-कित-शिशा-कलाश्चण्ड-कोदण्ड-हस्ताः। त्र्यक्षा रुद्राक्षमालाः प्रकटित-विभवाः शाम्भवा मूर्तिभेदाः रुद्राः श्रीरुद्रसूक्त-प्रकटित-विभवा नः प्रयच्छन्तु सौख्यम्॥ ॥पञ्चपूजा॥ लं पृथिव्यात्मने गन्धं समर्पयामि। हं आकाशात्मने पूष्पैः पूजयामि। यं वाय्वात्मने धूपमाघ्रापयामि। रं अभ्यात्मने दीपं दर्शयामि। वं अमृतात्मने अमृतं महानैवेद्यं निवेदयामि। सं सर्वात्मने सर्वोपचारपूजां समर्पयामि।

ॐ गुणानां त्वा गुणपिति १ हवामहे कविं कवीनामुप्मश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् सादेनम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

रां चे में मयेश्व में प्रियं चे में उनुकामर्श्व में कामेश्व में सौमनसर्श्व में भद्रं चे में श्रेयंश्व में वस्यंश्व में यर्राश्च में भग्नेश्व में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमेश्व में धृतिश्व में विश्वं च में महंश्व में सांविच्च में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूर्श्व में सीरं च में ल्यश्वं म ऋतं चे में उमृतं च में उय्क्षमं च में उनामयच में जीवातुश्व में दीर्घायुत्वं चे में उनिमृतं च में अभ्यं च में सुगं चे में रायंनं च में सूषा चे में सुदिनं च में।।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ नमो भगवतें रुद्राय॥ नर्मस्ते रुद्र मुन्यवं उतो त इर्षवे नर्मः। नर्मस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नर्मः॥ या त इर्षुः शिवर्तमा शिवं बुभूवं ते धनुः। शिवा शर्य्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचांकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभुर्घस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि रसीः पुरुषं जगत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छविदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मः सुमना असंत्॥ अध्यवोचदिधवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अही 🖫 श्र सर्वौञ्जम्भयन्त्सर्वौश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलंः। ये चेमाः रुद्रा अभितौ दिक्षु श्रिताः संहस्त्रशोऽवैषार हेर्ड ईमहे॥ असौ योऽवसपीत नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अंदश्वन्नद्दशमुद्दार्यः॥ उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढुषै॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुञ्ज धन्वनस्त्वमुभयोराहियोज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इष्वः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीर्य शल्यानां मुर्खा शिवो नः सुमना भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बार्णवाश उत्।। अनेशन्नस्येषव आभुरस्य निष्क्षिथः। या ते हेतिमी दृष्टम् हस्ते बभूवं ते धर्नुः ॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वर्मयक्ष्मया परिब्भुज। नर्मस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवै॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः॥ अथो य ईषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

[नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्तकायं त्रिका[ला]ग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं सत्वनां पत्तेये नर्मः॥२॥

मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय नमः॥]
नमो हिरंण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पत्ये नमो नमो वृक्षेभ्यो
हरिकेशेभ्यः पश्नां पत्ये नमो नमः सिर्पञ्जराय त्विषीमते
पथीनां पत्ये नमो नमो बभ्छुशायं विव्याधिनेऽन्नां पत्ये
नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पत्ये नमो नमो भवस्य
हेत्ये जगतां पत्ये नमो नमो रुद्रायातताविने क्षेत्राणां पत्ये
नमो नमः सूतायाहेन्त्याय वनानां पत्ये नमो नमो रोहिताय
स्थपत्ये वृक्षाणां पत्ये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां

पत्रंये नमों नमों भुवन्तयें वारिवस्कृतायौषधीनां पत्रंये नमो नम

उचैर्घो षायाकन्द्यंते पत्तीनां पत्ये नमो नर्मः कृत्स्रवीताय धावंते

 अश्वेभ्योऽश्वेपतिभ्यश्च वो नर्मः॥३॥

नमं आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उर्गणाभ्यस्तृश्-हृतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपितिभ्यश्च वो नमो नमो व्रात्तेभ्यो व्रात्तपितभ्यश्च वो नमो नमो गणभ्यो गणपितभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्यः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थेभ्यश्च वो नमो नमो रथेभ्यो रथपितभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, श्वन्तृभ्यः सङ्गहीतृभ्यश्च वो नमो नमस्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुललिभ्यः कुमरिभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नमं इषुकृद्यो धन्वकृद्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो । ॥ १॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः शुर्वायं च पशुपत्यं च नमों नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमः कपिर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च शतधंन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीदुष्टमाय चेषुंमते च नमों हुस्वायं च वामनायं च नमों बृहते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वने च नमों अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आशवें चाजिरायं च नमः शीवियाय च शीभ्यांय च नमं ऊम्यांय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्यांय च॥५॥

नमौ ज्येष्ठायं च किन्छायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमौ मध्यमायं चापगुत्भायं च नमौ जघुन्याय च बुधियाय च नमः सोभ्याय च प्रतिसयीय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वयीय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नमं आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमो बिल्मिने च कव्चिने च नमः श्रुतायं च श्रुतस्नेनायं च॥६॥

नमों दुन्दुभ्याय चऽऽहन्न्याय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिताय च नमों निष्किणों चेषुधिमतें च नमंस्तीक्ष्णेषेवे चऽऽयुधिनें च नमः स्वायुधायं च सुधन्वने च नमः स्वत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमों नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्याय चाव्ट्याय च नमों वर्ष्याय च नमों मेध्याय च विद्युत्याय च नमें ईिंप्रयाय चऽऽतुप्याय च नमों वात्याय च रेष्मियाय च नमों वास्तुव्याय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमस्ताम्रायं चारुणायं च नमः शङ्गायं च पशुपतंयं च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च नमों हुन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शम्भवें च मयोभवें च नमः शङ्करायं च मयस्करायं च नमः शिवायं च शिवतराय च नमस्तीथ्यीय च कूल्याय च नमः पायीय चावायीय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमं आतायीय चऽऽलाद्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिक्त्याय च प्रवाह्याय च॥८॥

नर्म इरिण्याय च प्रपृथ्याय च नर्मः किश्शिलायं च क्षयणाय च नर्मः कपर्दिने च पुलुस्तये च नमो गोष्ट्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमः काट्याय च गहरेष्ठायं च नमों हृद्य्याय च निवेष्याय च नमः पाश्सव्याय च रजस्याय च नमः शुष्याय च हित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमे ऊव्याय च सूम्याय च नमः पण्याय च पण्डाद्याय च नमोऽपगुरमाणाय चाभिष्ठते च नमे आख्विद्ते च प्रिक्विद्ते च नमो वः किरिकेभ्यो देवानाश् हृदयेभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमे आनिरहतेभ्यो नमे आमीवत्केभ्यः॥९॥

द्रापे अन्धंसस्पते दरिद्रन्नीलेलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽममत्॥ या तें रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसै॥ इमा र रुद्रायं तवसं कपुर्दिनं क्षयद्वीरायु प्रभरामहे मृतिम्॥ यथा नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नों रुद्रोत नो मर्यस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तद्श्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नौ महान्त्रमृत मा नौ अर्भकं मा न उक्षेन्तमृत मा न उक्षितम्। मा नौ वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवौ रुद्र रीरिषः॥ मा नस्तोके तनेये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितो वधीर्हिवष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषद्वे क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव बूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनं मृगं न भीममुपहलुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तर्वानो अन्यं ते अस्मन्नि वंपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मितिरेघायोः। अवं स्थिरा मघवंद्र्यस्तनुष्व मीर्वस्तोकाय तनयाय मृडय॥ मीर्द्वष्टम् शिवंतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुधं निधाय कृत्तिं वस्तान् आ चर् पिनांकं बिभ्रदा गीहि॥ विकिरिद् विलोहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रश्रं हेतयोऽन्यमस्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बांहुवोस्तवं हेतयः। तासामीशांनो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यण्विऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नील्रेग्रीवाः शितिकण्ठाः श्वां अधः, क्षंमाचरः॥ नील्रेग्रीवाः शितिकण्ठा दिव रूर्द्रा उपिश्रताः॥ ये वृक्षेषुं सस्पिक्षंरा नील्रेग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विश्वाखासः कपूर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्॥ ये पृथां पिथ्रक्षंय ऐलबृदा यव्युधः॥ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकावन्तो निषक्षिणः॥ य एतावन्तश्च भूया सस्श्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ नमी रुद्रभ्यो ये पृथिव्यां यैऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामन्नं वातो वर्षिमषेवस्तेभ्यो दश्च प्राचीर्दश्च दक्षिणा दश्च प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वांस्तेभ्यो नमस्ते नौ मृख्यन्तु ते यं दिष्मो यश्च नो द्वेष्टि तं वो जम्भे द्धामि॥११॥

[त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वारुकिमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥ तर्मुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयंति भेष्वजस्य। (ऋक्) यक्ष्वामहे सौमनसायं रुद्धं नमौभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः। अयं मै विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मां विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंर्मे पाहि॥]

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नविष्णू स्जोष्सेमा वर्धन्तु वां गिरंः। चुन्नैर्वाजेभिरागतम्॥ वाजिश्च में प्रस्वश्चं में प्रयंतिश्च में प्रसितिश्चं में धीतिश्चं में कर्तृश्च में स्वरंश्च में श्लोकंश्च में श्रावश्चं में श्रुतिश्च में ज्योतिश्च में सुवंश्च में प्राणश्चं मेऽपानश्चं में व्यानश्च मेऽसृश्च में चित्तं चं म आधीतं च में वाक्चं में मनश्च में चक्षुंश्च में श्लोत्रं च में दक्षश्च में बलं च म ओजिश्च में सहश्च म आयुंश्च में जरा चं म आत्मा चं में तन्श्चं में शर्म च में वर्म च मेंऽङ्गीनि च मेंऽस्थानि च में परूर्षि च में शरीराणि च मे॥ यो देवाना प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिरण्यगर्भं पंश्यत जायंमान्श्वं स नौ देवः शुभया स्मृत्याः संयुनक्तु॥

अनेन प्रथम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>महादेवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१॥

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमश्च मेऽमश्च मे जेमा च मे मिहमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वर्राश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोद्श्च मे जातं च मे जिन्ध्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भिव्ध्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृप्तं च मे कृप्तिश्च मे मृतिश्चं मे सुमृतिश्चं मे॥

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौरित कश्चित्। वृक्ष ईव स्तब्यो दिवि तिष्ठत्येक्स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्॥ अनेन द्वितीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>शिवः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमन्सश्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्जाश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में सांविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्र में प्रसूर्श्र में सीरं च में ल्यश्रं म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच में जीवातुंश्र में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च में अपंचं च में सुगं चं में रायंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में।

न कर्मणा न प्रजया धर्नेन त्यागेनैके अमृत्त्वमांनुशुः। परेण नाकं निहितं गुहांयां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति॥ अनेन तृतीय-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥३॥

उन्हीं में सूनृतां च में पर्यश्च में रसंश्च में घृतं चं में मधुं च में सिर्धिश्च में सपीतिश्च में कृषिश्चं में वृष्टिश्च में जैत्रं च म औद्भिद्यं च में र्यिश्चं में रायंश्च में पुष्टं चं में पुष्टिश्च में विभु चं में प्रभु चं में बहु चं में भूयंश्च में पूर्णं चं में पूर्णतरं च में ऽक्षितिश्च में कूर्यवाश्च में इत्रं च में ऽक्षुंच में व्रीहर्यश्च में यवाश्च में माषाश्च में तिलाश्च में मुद्राश्चं में खल्वाश्च में गोंधूमाश्च में मसुराश्च में प्रियक्षंवश्च में ऽणवश्च में स्यामकाश्च में नीवाराश्च में॥

वेदान्तिविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्न्यांस योगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे॥ अनेन चतुर्थ-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः शङ्करः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्च में पर्वताश्च में सिकंताश्च में वनस्पत्यश्च में हिरंण्यं च मेऽयंश्च में सीसं च में त्रपृश्च में श्यामं चं में लोहं चं मेऽग्निश्चं म आपंश्च में वीरुघंश्च म ओषंघयश्च में कृष्टपच्यं चं मेऽकृष्टपच्यं चं में ग्राम्यार्श्च में पुशवं आर्ण्यार्श्च युझेनं कल्पन्तां वित्तं च में वित्तिश्च में भूतं चं में भूतिश्च में वस्तुं च में वस्तिश्च में कमें च में शक्तिश्च मेंऽर्थश्च म एमंश्च म इतिश्च में गतिश्च में॥

दुहं विपापं प्रमैऽश्मभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसङ्स्थम्। तुत्रापि दहं गुगनं विशोकस्तिस्मिन् यदन्तस्तदुपसितुव्यम्॥ अनेन पञ्चम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>नीललोहितः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥५॥

अग्निश्चं म इन्द्रंश्च में सोमंश्च म इन्द्रंश्च में सिवता चं म इन्द्रंश्च में सरंस्वती च म इन्द्रंश्च में पूषा चं म इन्द्रंश्च में बृह्स्पतिश्च म इन्द्रंश्च में मित्रश्चं म इन्द्रंश्च में वरुणश्च म इन्द्रंश्च में त्वष्टां च म इन्द्रंश्च में धाता चं म इन्द्रंश्च में विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च में ऽिधनौं च म इन्द्रंश्च में मुरुतंश्च म इन्द्रंश्च में विश्वें च में देवा इन्द्रंश्च में पृथिवी चं म इन्द्रंश्च में उन्तरिक्षं च म इन्द्रंश्च में घौर्श्च म इन्द्रंश्च में दिशंश्च म इन्द्रंश्च में मूर्धा चं म इन्द्रंश्च में प्रजापितिश्च म इन्द्रंश्च में॥

यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परेः स महेश्वरः॥ अनेन षष्ठम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः ईशानः सुप्रीतः

सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥६॥

अध्राश्चं मे रिश्मश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाध्राश्चं मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्चं मे मन्थी चं म आग्रयणश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे ध्रुवश्चं मे वैश्वानुरश्चं म ऋतुग्रहाश्चं मेऽतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्चं मे वैश्वदेवश्चं मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्चं म आदित्यश्चं मे सावित्रश्चं मे सारस्वतश्चं मे पौष्णश्चं मे पालीवतश्चं मे हारियोजनश्चं मे॥

सद्योजातं प्रेपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नर्मः। भवे भवे नाति भवे भवस्व माम्। भवोद्भवाय नर्मः॥ अनेन सप्तम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>विजयः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥७॥

इध्मश्च में बहिश्च में वेदिश्च में घिष्णियाश्च में स्त्रचंश्च में चम्सार्श्च में ग्रावाणश्च में स्वरंवश्च म उपर्वार्श्च में ऽधिषवणे च में द्रोणकल्डार्श्च में वाय्व्यानि च में पूत्भृच्च म आधवनीयश्च म आग्नींग्नं च में हिव्धानं च में गृहार्श्च में सद्श्च में पुरोडाशांश्च में पचतार्श्च में ऽवभृथर्श्च में स्वगाकारर्श्च में॥

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमौ रुद्राय नमः कालीय नमः कलेविकरणाय नमो बलेविकरणाय नमो बलीय नमो बलेप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमौ मनोन्मनाय नमः॥ अनेन अष्टम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः <u>भीमः</u> सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥८॥

अग्निश्चं में घर्मश्चं में ऽर्कश्चं में सूर्यश्च में प्राणश्चं में ऽश्वमेंधश्चं में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्चं में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चंश्च में यज्ञेनं कल्पन्तामृकं में सामं च में स्तोमश्च में यज्जेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्चं में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेनं कल्पेताम्॥

अघोरैभ्योऽथ घोरैभ्यो घोर्घोर्ततरेभ्यः। सर्वैभ्यः सर्वशर्वैभ्यो नर्मस्ते अस्तु रुद्धरूपेभ्यः॥ अनेन नवम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः देवदेवः सुप्रीतः

सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥९॥

गर्भौश्च मे वत्साश्च मे त्र्यविश्व मे त्र्यवी चं मे दित्यवार्च मे दित्यौही चं मे पञ्चविश्व मे पञ्चावी चं मे त्रिवत्सर्श्च मे त्रिवत्सा चं मे तुर्यवार्च मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टोही चं म उक्षा चं मे व्या चं म ऋष्मश्चं मे वेहचं मेऽनुद्वां चं मे धेनुश्चं म आयुर्यहोनं कल्पतां प्राणो यहोनं कल्पतामपानो यहोनं कल्पतां व्यानो यहोनं कल्पतां चक्षुर्यहोनं कल्पताः श्रोत्रं यहोनं कल्पतां मनो यहोनं कल्पतां वाग्यहोनं कल्पतामात्मा यहोनं कल्पतां यहो यहोनं कल्पतामात्मा यहोनं कल्पतां यहो यहोनं कल्पतामात्मा यहोनं कल्पतां यहो यहोनं कल्पतामा। तत्पुरुषाय विद्यहें महादेवायं धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोद्यात्॥ अनेन दशम-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः भवोद्भवः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥१०॥

एको च मे तिस्तर्श्च मे पर्ञ्च च मे स्प्तर्त्व च मे नवं च म एकोद्श च मे त्रयोद्श च मे पर्ञ्चद्श च मे स्प्तर्द्श च मे नवंद्श च म एकविश्शतिश्च मे त्रयोविश्शतिश्च मे पर्ञ्चविश्शतिश्च मे स्प्तिविश्शतिश्च मे नवंविश्शतिश्च म एकित्रिश्शच मे त्रयंस्त्रिश्च मे चतंस्त्रश्च मेऽष्टो च मे द्वाद्श च मे षोडंश च मे विश्शतिश्च मे चतुर्विश्शतिश्च मेऽष्टाविश्शतिश्च मे द्वात्रिश्च मे चत्वारिश्शच मे चतुर्श्वत्वारिश्शच मेऽष्टाचंत्वारिश्शच मे वाजिश्च प्रस्वश्चापिजश्च कर्तुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥

ईशानः सर्वविद्यानामिश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो-ऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो में अस्तु सदाशिवोम्॥ अनेन एकादश-वार-जपेन भगवान् सर्वात्मकः आदित्यात्मकः श्री रुद्रः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥११॥

[इडां देवहर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानि शशसिष्दिश्चेदेवाः

चमकप्रश्नः

स्क्तवाचः पृथिवि मात्मां मां हिश्सीर्मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्ष्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥] ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ रुद्रप्रश्नः॥

ॐ गुणानां त्वा गुणपंति १ हवामहे कविं कवीनामुप्मश्रवस्तमम्। ज्येष्टराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत् आ नेः शृण्वन्नूतिभिः सीद् साद्नम्॥ ॐ महागणपतये नमः॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय॥

नमस्ते रुद्र मन्यवं उतो त इषवे नमः। नमस्ते अस्तु धन्वने बाहुभ्यामुत ते नर्मः॥ या त इषुः शिवतमा शिवं बभूवं ते धनुः। शिवा शर्य्या या तव तया नो रुद्र मृखय॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तनुवा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्घस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि सी: पुरुषं जगत्॥ शिवेन वर्चसा त्वा गिरिशाच्छीवदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मश सुमना असंत्॥ अध्यंवोचद्धिवक्ता प्रथमो दैव्यौ भिषक्। अही 🖢 श्र _ सर्वौञ्जम्भयन्त्सर्वौश्च यातुधान्यः॥ असौ यस्ताम्रो अंरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलेः। ये चेमार रुद्रा अभितौ दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषार हेर्ड ईमहे॥ असौ यौऽवसर्पीत नीलग्रीवो विलौहितः। उतैनं गोपा अंदरान्नदंशानुदहार्यः॥ उतैनं विश्वा भूतानि स दृष्टो मृंडयाति नः। नमों अस्तु नीलंग्रीवाय सहस्राक्षायं मीढ्षे॥ अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नर्मः। प्र मुं धन्वनस्त्व-मुभयोरार्त्तियोर्ज्याम्॥ याश्चं ते हस्त इर्षवः परा ता भंगवो वप। अवतत्य धनुस्त्व सहस्राक्ष शतेषुधे॥ निशीय शल्यानां मुखी शिवो नः सुमना भव। विज्यं धनुः कपर्दिनो विश्लेखो बार्णवाश

उत्।। अनेशन्नस्येषेव आभुरंस्य निष्क्षिथः। या ते हेतिमी दुष्टम् हस्ते बभूवं ते धनुः॥ तयाऽस्मान् विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिक्रुज। नमस्ते अस्त्वायुधायानातताय धृष्णवै॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्त विश्वतः॥ अथो य ईषुधिस्तवऽऽरे अस्मन्नि धेहि तम्॥१॥

नर्मस्ते अस्तु भगवन् विश्वेश्वरायं महादेवायं त्र्यम्बकायं त्रिपुरान्त्वकायं त्रिकालाग्निकालायं कालाग्निरुद्रायं नीलकण्ठायं मृत्युञ्जयायं सर्वेश्वरायं सदाशिवायं श्रीमन्महादेवाय् नर्मः॥

नमो हिर्रण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतेये नमो नमो वृक्षेभ्यो हिर्रकेशेभ्यः पशूनां पतेये नमो नमेः सिरपञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतेये नमो नमो बभ्छुशायं विव्याधिनेऽन्नां पतेये नमो नमो हिर्रकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतेये नमो नमो मवस्य हेत्ये जर्गतां पतेये नमो नमो रुद्रायातताविने क्षेत्राणां पतेये नमो नमो स्तायाहंन्त्याय वनानां पत्ये नमो नमो रोहिताय स्थपतेये वृक्षाणां पत्ये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पत्ये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पत्ये नमो नमे उच्चेधीषायाक्रन्द्यंते पत्तीनां पत्ये नमो नमेः कृत्स्नवीताय धावेते सत्वेनां पत्ये नमेः॥२॥

नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधिनीनां पर्तये नमो नमेः ककुभायं निषक्षिणे स्तेनानां पर्तये नमो नमो निषक्षिणं इषुधिमते तस्कराणां पर्तये नमो नमो वर्श्वते परिवर्श्वते स्तायूनां पर्तये नमो नमौ निचेरवे परिचरायारंण्यानां पत्ये नमो नमः सृकाविभ्यो जिघारंसद्यो मुष्णतां पत्ये नमो नमोऽसिमद्यो नक्तं चर्दद्यः प्रकृन्तानां पत्ये नमो नमं उष्णीिषणे गिरिचरायं कुलुञ्चानां पत्ये नमो नम् इषुमद्यो धन्वाविभ्यश्च वो नमो नमं आतन्वानेभ्यः प्रतिद्धानेभ्यश्च वो नमो नमं आयच्छद्यो विसृजद्यश्च वो नमो नमोऽस्यद्यो विध्यद्यश्च वो नमो नम् आसीनेभ्यः शयानेभ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्यो जार्यद्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्यो धार्वद्यश्च वो नमो नमः स्माभ्यः स्मापितिभ्यश्च वो नमो नमो अश्वभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः॥३॥

नमं आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम् उर्गणाभ्यस्तृश्-हृतीभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपितभ्यश्च वो नमो नमो व्रात्तेभ्यो व्रात्तपितभ्यश्च वो नमो नमो गणभ्यो गणपितभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमो महन्द्राः, क्षुल्लकेभ्यश्च वो नमो नमो रिथभ्योऽर्थभ्यश्च वो नमो नमो रथैभ्यो रथपितभ्यश्च वो नमो नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमो नमः, श्वन्तुभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नम्स्तक्षंभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलिलभ्यः कुमिरभ्यश्च वो नमो नमः पुञ्जिष्टेभ्यो निषादेभ्यश्च वो नमो नमं इषुकृद्धो धन्वकृद्धश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो नमो मृगयुभ्यः श्वनिभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः श्वपितिभ्यश्च वो नमो नमो ॥४॥

नमों भ्वायं च रुद्रायं च नमः शुर्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नमः सहस्राक्षायं च शतधन्वने च नमों गिरिशायं च शिपिविष्टायं च नमों मीढुएंमाय चेषुंमते च नमों हृस्वायं च वामनायं च नमों बृह्तते च वर्षीयसे च नमों वृद्धायं च संवृध्वंने च नमों अग्रियाय च प्रथमायं च नमं आश्ववं चाजिरायं च नमः शीव्रियाय च शीभ्याय च नमं ऊम्यीय चावस्वन्याय च नमः स्रोतस्याय च द्वीप्याय च॥५॥

नमौ ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमः पूर्वजायं चापरजायं च नमौ मध्यमायं चापगुल्भायं च नमों जघन्याय च बुधियाय च नमेः सोभ्याय च प्रतिसयीय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमं उर्वयीय च खल्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमो वन्याय च कक्ष्याय च नर्मः श्रवायं च प्रतिश्रवायं च नर्म आशुषेणाय चाशुरंथाय च नमः शूराय चावभिन्दते च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमों बिल्मिने च कवचिने च नर्मः श्रुतायं च श्रुतसेनायं च॥६॥ नमों दुन्दुभ्याय चऽऽहन्न्याय च नमों धृष्णवें च प्रमृशायं च नमों दूतायं च प्रहिताय च नमों निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चऽऽयुधिने च नर्मः स्वायुधायं च सुधन्वंने च नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नर्मः काट्याय च नीप्याय च नमः सूद्याय च सरस्याय च नमो नाद्यायं च वैश्वन्तायं च नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्यायं च नमों मेध्याय च विद्युत्याय च नमं ईिधयाय चऽऽतप्याय च नमो वात्याय च रेष्मियाय च नमौ वास्तव्याय च वास्तुपायं च॥७॥

नमः सोमाय च रुद्रायं च नमस्ताम्रायं चारुणायं च नमः राङ्गायं च पशुपतंये च नमं उग्रायं च भीमायं च नमों अग्रेवधायं च दूरेवधायं च

नमों हन्त्रे च हनीयसे च नमों वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय नमः शम्भवें च मयोभवें च नर्मः शङ्करायं च मयस्करायं च नर्मः शिवायं च शिवतराय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नर्मः पार्याय चावार्याय च नर्मः प्रतर्रणाय चोत्तरणाय च नर्म आतार्याय चऽऽलाद्याय च नमः शष्याय च फेन्याय च नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च॥८॥ नमं इरिण्याय च प्रपृथ्याय च नमः किश्शिलायं च क्षयंणाय च नर्मः कपर्दिने च पुलस्तर्ये च नमो गोष्ट्याय च गृह्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नर्मः काट्याय च गह्वरेष्ठायं च नर्मौ हृद्याय च निवेष्याय च नर्मः पाश्सव्याय च रजस्याय च नमः शुष्याय च हरित्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमं ऊर्व्याय च सूम्यीय च नर्मः पण्यीय च पर्णश्चाया च नमौऽपगुरमाणाय चाभिन्नते च नर्म आख्विदते चं प्रख्विदते च नर्मो वः किरिकेभ्यो देवाना हदंयभ्यो नमो विक्षीणकेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नम

द्रापे अन्धंसस्पते दरिंद्रन्नीलंलोहित। एषां पुरुषाणामेषां पंशूनां मा भेर्माऽरो मो एषां किं चनऽऽमंमत्॥ या ते रुद्र शिवा तन्ः शिवा विश्वाहंभेषजी। शिवा रुद्रस्यं भेषजी तयां नो मृड जीवसे॥ इमार रुद्रायं तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मृतिम्॥ यथां नः शमसंद्विपदे चतुंष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥ मृडा नो रुद्रोत नो मयंस्कृधि क्षयद्वीराय नर्मसा विधेम ते। यच्छं च योश्च मर्नुरायजे पिता तदंश्याम तवं रुद्र प्रणीतौ॥ मा नो महान्तमुत मा नो अर्भुकं मा न उक्षंन्तमुत मा ने उिष्तुतम्। मा

नों वधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥ मा नंस्तोके तनेये मा न आयुंषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामितो वधीर्हिवष्मन्तो नर्मसा विधेम ते॥ आरात्ते गोघ्न उत पूरुषघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु। रक्षां च नो अधि च देव ब्रूह्यधा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥ स्तुहि श्रुतं र्गर्तसदं युवनं मृगं न भीममुपह्लुमुग्रम्। मृडा जिर्तेत्रे रुद्र स्तवनो अन्यं ते अस्मन्नि वेपन्तु सेनाः॥ परिणो रुद्रस्यं हेतिवृणक्तु परि त्वेषस्यं दुर्मतिरंघायोः। अवं स्थिरा मुघवंद्यस्तनुष्व मीर्वस्तोकाय तनयाय मृखय॥ मीढ्रष्टम शिवंतम शिवो नः सुमना भव। परमे वृक्ष आयुंधं निधाय कृत्तिं वसान आ चर पिनांकं बिभ्रदा गीहि॥ विकिरिद विलौहित नर्मस्ते अस्तु भगवः। यास्ते सहस्रई हेतयोऽन्यमस्मन्नि वंपन्तु ताः॥ सहस्राणि सहस्रधा बाहुवोस्तवं हेतर्यः। तासामीशानो भगवः पराचीना मुखां कृधि॥१०॥

सहस्राणि सहस्रशो ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ अस्मिन् महत्यर्णवैऽन्तरिक्षे भवा अधि॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा अधः, क्षंमाचराः॥ नीलंग्रीवाः शितिकण्ठा दिव रे रुद्रा उपिश्रताः॥ ये वृक्षेषुं सुस्पिन्नरा नीलंग्रीवा विलोहिताः॥ ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपुर्दिनः॥ ये अन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्॥ ये पथां पिथ्रस्रय ऐलबृदा य्व्युधंः॥ ये तीर्थानि प्रचर्रन्ति सृकार्वन्तो निषक्षिणः॥ य एतार्वन्तश्च भूयारंसश्च दिशों रुद्रा वितस्थिरे॥ तेषारं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि॥ नमौ रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां यैऽन्तरिक्षे ये दिवि येषामञ्चं वातौ वर्षिमषेवस्तेभ्यो दश प्राचीर्दशं दक्षिणा दशं प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोध्वास्तेभ्यो नमस्ते नौ मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्चं नो द्वेष्टि तं वो जम्में द्धामि॥११॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगृन्धिं पृष्टिवर्धनम्। उर्वाक्किमिव बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥ यो कृद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो कृद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश तस्मै कृद्राय नमी अस्तु॥ तमुष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य। (ऋक्) यक्ष्वामहे सौमनसाय कृद्रं नमौभिर्देवमसुरं दुवस्य॥ अयं मे हस्तो भगवान्यं मे भगवत्तरः। अयं मै विश्वभैषजोऽयं शिवाभिमर्शनः॥

ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तेवे। तान् यज्ञस्ये मायया सर्वानवं यजामहे। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥ ओं नमो भगवते रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि। प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः। तेनान्नेनांप्यायस्व॥ नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युंमें पाहि॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ चमकप्रश्नः॥

अग्नविष्णू सजोषसेमा वर्धन्तु वां गिरंः। युम्नैर्वाजेभिरागंतम्॥ वार्जश्च मे प्रस्वश्चं मे प्रयंतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्चं मे कर्तुश्च मे स्वरंश्च मे श्लोकंश्च मे श्रावश्चं मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे सुवंश्च मे प्राणश्चं मेऽपानश्चं मे व्यानश्च मेऽसुंश्च मे चित्तं चं म आधीतं च मे वार्क मे मनश्च मे चक्षुंश्च मे श्लोत्रं च मे दक्षंश्च मे बलं च म ओजंश्च मे सहश्च म आयुंश्च मे जरा चं म आत्मा चं मे तुनूश्चं मे शर्मं च मे वर्मं च मेऽङ्गानि च मेऽस्थानि च मे परूर्ंषि च मे शरीराणि च मे॥१॥

ज्येष्ठ्यं च म आधिपत्यं च मे मृन्युश्चं मे भामश्च मेऽमंश्च मेऽम्नंश्च मे जेमा च मे मिहुमा च मे विर्मा च मे प्रिथमा च मे विष्मा च मे द्राघुया च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगंच मे धनं च मे वर्राश्च मे त्विषिश्च मे कीडा च मे मोद्श्च मे जातं च मे जिन्ध्यमणि च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भिव्ध्यच मे सुगं च मे सुपथं च म ऋद्धं च म ऋद्धिश्च मे कृतं च मे कृतिश्च मे मितश्चं मे सुमितश्चं मे॥२॥

रां चं में मयंश्र में प्रियं चं मेऽनुकामश्रं में कामश्र में सौमनसश्रं में भद्रं चं में श्रेयंश्र में वस्यंश्र में यर्जाश्र में भगंश्र में द्रविणं च में यन्ता च में धर्ता च में क्षेमश्र में धृतिश्र में विश्वं च में महंश्र में सांविचं में ज्ञात्रं च में सूर्श्व में प्रसूर्श्व में सीरं च में लुयर्श्व म ऋतं चं मेऽमृतं च मेऽयक्षमं च मेऽनामयच में जीवातुंश्व में दीर्घायुत्वं चं मेऽनिमृतं च मेऽभयं च में सुगं चं में रायंनं च में सूषा चं में सुदिनं च में॥३॥ ऊकी मे सूनृतां च मे पर्यश्च मे रसंश्च मे घृतं चं मे मधुं च मे सिर्धश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च म औद्धिंद्यं च मे रियश्चं मे रायश्च मे पुष्टं चं मे पुष्टिश्च मे विभु चं मे प्रभु चं मे बहु चं मे भूयश्च मे पूर्णं चं मे पूर्णतरं च मेऽक्षितिश्च मे कूर्यवाश्च मेऽत्रं च मेऽक्षुंच मे त्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्राश्चं मे खल्वाश्च मे गोधूमाश्च मे मसुराश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे स्यामकाश्च मे नीवाराश्च मे॥४॥

अश्मां च में मृत्तिका च में गिरयंश्व में पर्वताश्व में सिकताश्व में वनस्पत्रयश्च में हिर्रण्यं च मेऽयश्च में सीसं च में त्रपुश्च में स्यामं च में लोहं चं मेऽग्निश्चं म आपश्च में वीरुधंश्च मु ओषंधयश्च में कृष्टपुच्यं चे मेऽकृष्टपच्यं चे मे ग्राम्याश्चे मे परावे आरण्याश्चे यज्ञेने कल्पन्तां वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे वसु च मे वस्तिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थेश्च म एमश्च म इतिश्च मे गतिश्च मे॥५॥ अग्निर्श्व म इन्द्रेश्च मे सोमेश्च म इन्द्रेश्च मे सविता च म इन्द्रेश्च मे सरस्वती च म इन्द्रेश्च मे पूषा च म इन्द्रेश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रेश्च में मित्रश्चं म इन्द्रंश्च में वर्रुणश्च म इन्द्रंश्च में त्वष्टां च म इन्द्रंश्च मे धाता चं म इन्द्रंश्च मे विष्णुंश्च म इन्द्रंश्च मेऽश्विनौ च म इन्द्रंश्च मे मरुतंश्च म इन्द्रंश्च में विश्वें च में देवा इन्द्रंश्च में पृथिवी चे म इन्द्रंश्च मेऽन्तरिक्षं च म इन्द्रेश्च मे घौर्श्व म इन्द्रेश्च मे दिश्वश्च म इन्द्रेश्च मे मूर्घा च म इन्द्रेश्च मे प्रजापतिश्च म इन्द्रेश्च मे॥६॥

अध्रुश्चं मे रिहमश्च मेऽदाँभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपा<u>ध्रुश्चं</u> मेऽन्तर्यामश्चं म ऐन्द्रवायवश्चं मे मैत्रावरुणश्चं म आश्विनश्चं मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुकश्चे मे मन्थी चे म आग्रयणश्चे मे वैश्वदेवश्चे मे धुवश्चे मे वैश्वानरश्चे म ऋतुग्रहाश्चे मेऽतिग्राह्याश्च म ऐन्द्राग्नश्चे मे वैश्वदेवश्चे मे मरुत्वतीयाश्च मे माहेन्द्रश्चे म आदित्यश्चे मे सावित्रश्चे मे सारस्वतश्चे मे पौष्णश्चे मे पालीवतश्चे मे हारियोजनश्चे मे॥७॥ इध्मश्चे मे बहिश्चे मे वेदिश्च मे धिष्णियाश्च मे स्त्रचंश्च मे चमसाश्चे मे ग्रावाणश्च मे स्वरंवश्च म उपर्वाश्चे मेऽधिषवणे च मे द्रोणकलुशश्चे मे वाय्व्यानि च मे पृत्भृच्चे म आधवनीयश्च म आग्नीग्नं च मे हविर्धानं च मे गृहाश्चे मे सदेश्च मे पुरोडाशांश्च मे पचताश्चे मेऽवभृथश्चे मे स्वगाकारश्चे मे॥८॥

अग्निश्चं में घर्मश्चं में ऽर्कश्चं में सूर्यश्च में प्राणश्चं में ऽश्वमेंधश्चं में पृथिवी च में ऽदितिश्च में दितिश्च में द्यौश्चं में शर्करीरङ्गलेयों दिश्चंश्च में यज्ञेन कल्पन्तामृकं में सामं च में स्तोमश्च में यज्ञेश्च में दीक्षा चं में तपश्च म ऋतुश्चं में वृतं चं में ऽहोरात्रयौर्वृष्ट्या बृहद्रथन्तरे चं में यज्ञेन कल्पेताम्॥९॥

गर्भाश्च मे वृत्सार्श्च मे त्र्यविश्च मे त्र्यवी चं मे दित्यवाचं मे दित्यौही चं मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी चं मे त्रिवृत्सर्श्च मे त्रिवृत्सा चं मे तुर्यवाचं मे तुर्योही चं मे पष्टवाचं मे पष्टौही चं म उक्षा चं मे वृहा चं मे प्रेनुश्च म आयुर्यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतां प्राणो यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां चश्चर्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतां यज्ञेनं कल्पतां वाग्यज्ञेनं कल्पतामात्मा यज्ञेनं कल्पतामा १०॥

एकां च में तिस्त्रश्चं में पर्ञं च में स्प्ता चं में नवं च म एकांद्रा च में त्रयोद्दा च में पर्ञंद्रा च में स्प्ताद्रा च में नवंद्रा च म एकविश्रातिश्च में त्रयोविश्रातिश्च में पर्ञंविश्रातिश्च में स्प्ताविश्रातिश्च में नवंविश्रातिश्च म एकित्रिश्राच में त्रयस्त्रिश्राच में चतंस्त्रश्च मेंऽष्टों चं में द्वाद्रा च में षोडंद्रा च में विश्रातिश्चं में चतुर्विश्रातिश्च मेंऽष्टाविश्रातिश्च में द्वात्रिश्रं राच में षद्गिश्राच में चत्वारिश्राचं में चतुश्चत्वारिश्राच मेंऽष्टाचंत्वारिश्राच में वाजिश्च प्रस्वश्चापिजश्च कर्तुश्च सुवंश्च मूर्धा च व्यक्षियश्चान्त्यायनश्चान्त्यश्च भौवनश्च भुवंनश्चाधिपतिश्च॥११॥

इडा देवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृह्स्पतिरुक्थामदानि शशसिष्दिश्चेदेवाः सूक्तवाचः पृथिवि मातुर्मा मां हिश्सीर्मध्रं मनिष्ये मध्रं जनिष्ये मध्रं वक्ष्यामि मध्रं वदिष्यामि मध्रंमतीं देवेभ्यो वार्चमुद्यासः शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभाये पितरोऽनुंमदन्तु॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ पुरुषसूक्तम् ॥

सहस्रेशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रेपात्। स भूमिं विश्वतौ वृत्वा। अर्त्यतिष्ठदृशाङ्गुलम्॥ पुरुष एवेद् सर्वम्॥ यद्भूतं यच्च भव्यम्॥ उतामृतत्वस्येशानः। यद्न्नेनातिरोहिति॥ एतावानस्य महिमा। अतो ज्यायाङ्श्च पूर्रुषः। पादौंऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादेस्यामृतं दिवि॥ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुर्रुषः। पादौऽस्येहाऽऽभवात्पुनः। ततो विश्वद्यकामत्। सारानानराने अभि॥ तस्मौद्विरार्डजायत। विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथौ पुरः॥ यत्पुरुषेण हविषां। देवा युज्ञमतन्वत। वुसन्तो अस्यऽऽसीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शुरद्धविः॥ सप्तास्यऽऽसन् परिधर्यः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्। पुरुषं जातम्यतः। तेन देवा अयेजन्त। साध्या ऋषयश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहुतः। सम्भृतं पृषद्ाज्यम्। पुशूङ्स्ताङ्श्र्वेके वायुव्यान्। आर्ण्यान्याम्याश्च ये॥ तस्मौद्यज्ञात्सर्वेहुतंः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दार्श्ते जिज्ञिरे तस्मौत्। यजुस्तस्मोदजायत॥ तस्मादश्चो अजायन्त। ये के चौभयादेतः। गावौ ह जिज्ञरे तस्मौत्। तस्मौज्ञाता अजावयः॥ यत्पुर्रुषुं व्यद्धुः। कृतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किर्मस्य कौ बाहू। कावूरू पादावुच्येते॥ ब्राह्मणौऽस्य मुखंमासीत्। बाह्र राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः। पुद्धाः शूद्रो अजायत॥ चन्द्रमा मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च। प्राणाद्वायुरंजायत॥ नाभ्यां आसीदन्तरिक्षम्। शीष्णीं द्यौः

समेवर्तत। पद्भां भूमिर्दिशः श्रोत्रौत्। तथा लोकाः अंकल्पयन्॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे॥ सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्तै॥ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहारं। शकः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतंस्रः। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्था अर्यनाय विद्यते॥ यज्ञेनं युज्ञम्यजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥ अन्धः सम्भूतः पृथिव्यै रसाँच। विश्वकर्मणः समवर्तताधि। तस्य त्वष्टा विदर्धद्रपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवं विद्वानमृतं इह भवति। नान्यः पन्थां विद्यतेऽयनाय॥ प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः। अजार्यमानो बहुधा विजायते। तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमिच्छिन्ति वेधसः॥ यो देवेभ्य आर्तपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये॥ रुचं _ ब्राह्मं जनयन्तः। देवा अग्रे तद्बुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन् वशें॥ हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पल्यौं। अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षेत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मेनिषाण। अमुं मेनिषाण। सवं मनिषाण॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नारायणसूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – १३)

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुम्। विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हिरम्। विश्वमेवेदं पुरुषस्तिद्वश्वमुपंजीवित। पितं विश्वस्यऽऽत्मेश्वर्थः शाश्वतः श्विवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मानं परायणम्। नारायणपरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायणः परः। यच्चं किश्वज्वंगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा॥

अन्तर्बहिश्चे तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः। अनेन्तमव्ययं क्वि संमुद्रेऽन्तं विश्वराम्भुवम्। पुदाकोश प्रतीकाशः हृद्यं चाप्यधोमुंखम्। अधौ निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठंति। ज्वालमालाकुलं भाती विश्वस्यऽऽयतनं महत्। सन्तंतः श्वालाभिस्तुलम्बत्याकोश्वासन्निभम्। तस्यान्ते सुषिर सूक्ष्मं तस्मिन्त्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महाने-मिर्विश्वाचिर्विश्वतोमुखः। सोऽग्रेभुग्विमजन्तिष्टन्नाहारमजुरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमधः शायी रश्मयस्तस्य सन्तता। सन्तापयिति स्वं देहमापदितलमस्तकः। तस्य मध्ये विह्विशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतौयदमध्यस्थाद्विद्युल्लेखेव भारवरा। नीवार्श्कवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूर्पमा। तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः पर्मः स्वराट्॥ ऋतं सत्यं परं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपायु वै नमो नर्मः। नारायणायं विद्महें वासुदेवायं धीमहि। तन्नौ विष्णुः प्रचोदयात्।

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजार्रस् यो अस्कभायदुत्तर स्पधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णोर्राटमसि विष्णोः पृष्ठमसि विष्णोः श्रम्नैस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्धुवमसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ विष्णुसूक्तम्॥

विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विमुमे रजार्रसि यो अस्कभायुदुत्तरं सुधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोर्रुगायः॥

तदंस्य प्रियम्भिपाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णौः पुदे प्रमे मध्य उत्थ्सः। प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमणेषु। अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा। पुरो मात्रया तनुवा वृधान। न ते महित्वमन्वेश्चवन्ति॥

उभे ते विद्य रर्जसी पृथिव्या विष्णो देवत्वम्। प्रमस्यं विथ्से। विचंकमे पृथिवीमेष प्ताम्। क्षेत्राय विष्णुर्मनुषे दश्स्यन्। ध्रुवासो अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षितिः सुजनिमाचकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष प्ताम्। विचंकमे श्वतर्चसं महित्वा। प्र विष्णुरस्तु त्वसस्तवीयान्। त्वेषङ्ह्यंस्य स्थविरस्य नामं॥

॥ भूसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – १/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः – ३)

भूमिर्भूम्ना द्यौर्वेरिणाऽन्तिरक्षं महित्वा। उपस्थे ते देव्यदितेऽग्नि-मन्नादमन्नाद्यायाऽऽद्धे। आऽयङ्गोः पृश्लिरक्रमीद्सनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवंः। त्रिष्ट्रशद्धाम् वि राजित वाक्यतङ्गायं शिश्रिये। प्रत्यंस्य वह द्युभिः। अस्य प्राणाद्पानृत्यंन्तश्चरित रोचना। व्यंख्यन् महिषः सुवंः॥

यत्त्वौ कुद्धः परोवपं मन्युना यद्विर्त्या। सुकल्पंमग्ने तत्तव पुनस्त्वोद्दीपयामिस। यत्ते मन्युपरोप्तस्य पृथिवीमन् दध्वसे। आदित्या विश्वे तद्देवा वस्तवश्च समाभरन्। मनो ज्योतिर्जुषतामाज्यं विच्छिन्नं युज्ञश् सिम्मं दंधातु। बृहस्पतिस्तनुतािम्मं नो विश्वे देवा इह मदियन्ताम्। सप्त ते अग्ने सिमधः सप्त जिह्वाः सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि।

सप्त होत्राः सप्तधा त्वां यजन्ति सप्त योनीरापृणस्वा घृतेने। पुनेर्क्जां नि वर्तस्व पुनेरम्न इषाऽऽयुषा। पुनेर्नः पाहि विश्वतः। सह रय्या नि वर्तस्वाऽम्ने पिन्वस्व धार्रया। विश्विपस्त्रया विश्वतस्परि। लेकः सलेकः सुलेक्स्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु केतः सकेतः सुकेत्रस्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु विवस्वाः अदितिर्देवजूतिस्ते ने आदित्या आज्यं जुषाणा वियन्तु।

॥दुर्गा सूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् - ४/प्रपाठकः - १०/अनुवाकः - २)

जातवेदसे सुनवाम् सोमं मरातीयतो निद्हाति वेदः। स नः पर्षदिते दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यिः॥१॥

तामुग्निवर्णां तपेसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफुलेषु जुष्टौम्। दुर्गां देवी शर्रणमहं प्रपेद्ये सुतरिस तरसे नर्मः॥२॥

अये त्वं परिया नव्यौ अस्मान्थ्स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूर्श्व पृथ्वी बंहुला नं उर्वी भर्वा तोकाय तनयाय शंयोः॥३॥

विश्वानि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न नावा दुंरिताऽतिपर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौऽस्माकं बोध्यविता तनूनौम्॥४॥

पृतना जित्र सहमानमुग्रम् द्विम पर्माथ्सधस्थात्। स नः पर्षदिति दुर्गाणि विश्वा क्षामद्देवो अति दुरितात्यिः॥५॥

प्रलोषि कमीड्यौ अध्वरेषु सनाच होता नव्यश्च सित्सि। स्वाञ्चौग्ने तुनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं च सौर्भगमायंजस्व॥६॥

गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवैन्द्र विष्णोरनुसर्श्वरेम। नार्कस्य पृष्ठमभि संवसानो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्॥७॥

> कात्यायनायं विद्यहें कन्यकुमारि धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयात्॥

॥श्रीसूक्तम्॥

हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरंजतस्त्रजाम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातेवदो म आवह ॥१॥ तां म आवह जातेवदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥२॥ अश्वपूर्वां रंथम्ध्यां हस्तिनाद्प्रबोधिनीम्। श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीमींदेवीर्जुषताम्॥३॥

कां सोऽस्मितां हिर्रण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलेन्तीं तृप्तां तर्पर्यन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपेह्वये श्रियम्॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुद्ाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपेचेऽलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणे॥५॥

आदित्यवेर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पितस्तवे वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलीनि तपसा नुंदन्तु मायान्तरायाश्चे बाह्या अलक्ष्मीः॥६॥

> उपैतु मां देवस्रखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥७॥

क्षुत्पिपासामेलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नौशयाम्यहम्। अभूतिमस्पमृद्धिं च सर्वां निर्णुदं मे गृहात्॥८॥

गन्धद्वारां दुंराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपहये श्रियम्॥९॥

तां

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमंशीमहि। पुशूनां रूपमन्नस्य मिय श्रीः श्रीयतां यद्याः॥१०॥ कर्दमेन प्रजाभूता मिय सम्भव कर्दम। श्रियं वासर्य मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्॥ ११॥ आपः सृजन्तुं स्निग्धानि चिक्कीत वंस मे गृहे। नि चं देवीं मातरं श्रियं वासयं मे कुले॥१२॥ आर्द्रौ पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णौ हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्मेयीं लुक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥१३॥ आर्द्रौ यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पेद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मेयीं लक्ष्मीं जातेवेदो म आवह॥१४॥ आर्वह जातंवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावौ दास्योऽश्वौन् विन्देयं पुरुषानहम्॥१५॥ महादेव्ये चं विदाहें विष्णुपल्ये चं धीमहि। तन्नों लक्ष्मीः प्रचोदयांत्॥

॥ मेधासूक्तम्॥

(तैत्तिरीयारण्यकम् – ४/प्रपाठकः – १०/अनुवाकः – ४१–४४)

मेधादेवी जुषमाणा न आगाँद्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना। त्वया जुष्टा नुदमाना दुरुक्तान् बृहर्द्वदेम विद्ये सुवीराः। त्वया जुष्टे श्रृष्टिभेवित देवि त्वया ब्रह्माऽऽगतश्रीरुत त्वया। त्वया जुष्टेश्चित्रं विन्दते वसु सानो जुषस्व द्रविणो न मेधे॥ मेधां म इन्द्रो ददातु मेधां देवी सरस्वती। मेधां में अश्विनांवुभावार्धत्तां पुष्करस्रजा। अप्सरास्त्रं च या मेधा गन्ध्वेषुं च यन्मनः। देवीं मेधा सरस्वती सा माँ मेधा सुरिभर्जुषताः स्वाहा॥ आ माँ मेधा सुरिभर्विश्वरूपा हिर्रण्यवर्णा जर्गती जगम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा पिन्वमाना सा माँ मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम्। मिथे मेधां मिथे प्रजां मय्यग्निस्तेजो दधातु मिथे मेधां मिथे प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दधातु मिथे मेधां मिथे प्रजां मया स्वां प्रजां मिथे सूर्यो भ्राजो दधातु।

॥भाग्यसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – ८/अनुवाकम् – ९)

प्रातर्िम्ने प्रातिरन्द्र हवामहे प्रातिमित्रा वर्रुणा प्रातरिश्वना। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्र हवेम॥१॥

प्रातिर्जितं भर्गमुग्रश् हुवेम वयं पुत्रमिदितेर्यो विधर्ता। आर्द्धश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजां चिद्यं भर्गं भक्षीत्याहं॥२॥

भग प्रणेतुर्भग सत्यंराधो भगेमां धियमुद्वदद्नः। भगप्रणो जनय गोभिरश्वेर्भगुप्रनृभिनृवन्तः स्याम॥३॥

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रिपत्व उत मध्ये अहाँम्। उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानार सुमतौ स्याम॥४॥ भगं एव भगवार अस्तु देवास्तेनं वयं भगवन्तः स्याम। तं त्वा भग सर्व इज्जौहवीमि सनौ भग पुर एता भवेह॥५॥ समध्वरायोषसौऽनमन्त दिधकावेव शुच्ये पदाये। अर्वाचीनं वसुविदं भगन्नो रथिमवाश्वावाजिन आवहन्तु॥६॥ अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासौ वीरवितीः सद्मुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुर्हाना विश्वतः प्रपीनायूयं पात स्वस्तिभिः सद्गं नः॥७॥

यो माँऽग्ने भागिनई सन्तमथाभागं चिकीर्षति। अभागमंग्ने तं कुरु मामंग्ने भागिनं कुरु॥८॥

॥ पवमानसूक्तम्॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् - १/प्रश्नः - ४/अनुवाकः - ८)

(तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ५/प्रपाठकः – ६/अनुवाकः – १)

ॐ तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम्। शं नौ अस्तु द्विपदै। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः। द्धिकाव्ण्णो अकार्षम्। जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरिभनो मुर्खाकरत्। प्रण आयू ईषि तारिषत्। आपो हि ष्ठा मेयो भुवस्ता ने ऊर्जे देघातन। महेरणाय चक्षेसे। यो वंः शिवतमो रसस्तस्यं भाजयते ह नंः। उशतीरिव मातरंः। तस्मा अरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वेथ। आपौ जनयेथा च नः॥ हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासुं जातः कुश्यपो यास्विन्द्रेः। अग्निं या गर्भं द्धिरे विरूपास्ता न आपः शङ्क स्योना भवन्तु॥ यासा<u>र</u> राजा वर्रुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यं जनानाम्। मधुश्रुतः शुर्चयो याः पविकास्ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ यासौ देवा दिवि कृण्वन्ति भक्षं या अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति। याः पृथिवीं पर्यसोन्दन्ति शुकास्ता नु आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ शिवेन मा चक्षुंषा पश्यताऽऽपः शिवयां तनुवोपं स्पृशत त्वचं मे। सर्वार् अग्नीर रेप्सुषदौ हुवे वो मिय वर्चो बलमोजो नि धेत्त॥ पर्वमानः सुवर्जनेः। पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा। पुनन्तुं मा देवजनाः। पुनन्तु मर्नवो धिया। पुनन्तु विश्वं आयर्वः। कत्वा कतू रन्। यत्ते पवित्रमर्चिषि। अग्ने वितंतमन्तरा। ब्रह्म

तेन पुनीमहे। उभाभ्यां देवसवितः। पवित्रेण सवेन च। इदं ब्रह्म पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागात्। यस्यै बह्वीस्तनुवौ वीतपृष्ठाः। तया मद्दन्तः सधमाद्येषु। वयङ् स्याम् पत्यो रयीणाम्। वैश्वानरो रिंमिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मयो भूः। द्यावीपृथिवी पर्यसा पयोभिः। ऋतावरी युज्ञिये मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवितुस्तृभिः। वर्षिष्ठेर्देवमन्मभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपनत। येनऽऽपो दिव्यङ्कराः। तेन दिव्येन ब्रह्मणा। इदं ब्रह्म पुनीमहे। यः पविमानीरध्येति। ऋषिभिः सम्भृतः रसम्। सर्वः स पूतमिश्राति। स्वदितं मातुरिश्वना। पावमानीर्यो अध्येति। ऋषिभिः सम्मृतः रसम्। तस्मै सरस्वती दुहे। क्षीर स्पर्धमधूदकम्॥ पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि पर्यस्वतीः। ऋषिभिः सम्भूतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत रे हितम्। पावमानीदिशन्तु नः। इमं लोकमथौ अमुम्। कामान्त्समधियन्तु नः। देवीर्देवैः समाभृताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघाहि घृतश्चतः। ऋषिभिः सम्मृतो रसः। बाह्मणेष्वमृत र्रं हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सद्।। तेनं सहस्रंधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं पवित्रम्। श्वातोद्यांमः हिरण्मयम्। तेनं ब्रह्मं विद्रौ वयम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सहमा पुनातु। सोमः स्वस्त्या वरुणः समीच्या। यमो राजाँ प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवैदा मोर्जयन्त्या पुनातु। भूर्भुवः सुर्वः।

तच्छं योरावृणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नौ

अस्तु द्विपदै। शं चतुष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः श

॥ आयुष्यसूक्तम्॥

यो ब्रह्मा ब्रह्मण उजाहार प्राणैः शिरः कृत्तिवासाः पिनाकी। ईशानो देवः स न आर्युर्दधातु तस्मै जुहोमि हविषा घृतेन॥१॥ विभ्राजमानः सरिरस्य मुध्याद्रोचमानो घर्मरुचिर्य आगात्। स मृत्युपाशानपनुंद्य घोरानिहायुषेणो घृतमंत्तु देवः॥२॥ ब्रह्मज्योतिर्ब्रह्मप्रलीषु गर्भं यमाद्धात् पुरुरूपं जयन्तम्। सुवर्णरम्भग्रहमंकमर्च्यं तमायुषे वर्धयामौ घृतेन॥३॥ श्रियं लक्ष्मीमौबलामम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनैत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनिर्ं सरूपामिहायुषे तर्पयामौ घृतेन॥४॥ दाक्षायण्यः सर्वयोन्यः स योन्यः सहस्रशो विश्वरूपा विरूपाः। सस्नवः सपतयः सयूथ्या आयुषेणो घृतमिदं जुष्नन्ताम्॥५॥ दिव्या गणा बहुरूपाः पुराणा आयुद्दिछदो नः प्रमर्थन्तु वीरान्। तेभ्यो जुहोमि बहुधा घृतेन मा नः प्रजाश रीरिषो मौत वीरान्॥६॥ एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव यतो बभूव भुवनस्य गोपाः। यमप्येति भुवनः साम्पराये स नो हविर्घृतमिहायुषैत्तु देवः॥७॥ वसून् रुद्रानादित्यान् मरुतौऽथ साध्यान् ऋभून् यक्षान् गन्धर्वाङ्श्व पितृङ्रश्च विश्वान्।

भृगून् सर्पाङ्श्वाङ्गिरसौऽथ सर्वान् घृत्र हुत्वा स्वायुष्या महयाम शुश्वत्॥८॥

> विष्णो त्वं नो अन्तमः शर्मं यच्छ सहन्त्य। प्रतेधारां मधुश्चत उथ्सं दुहृते अक्षितम्॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नवग्रहसूक्तम्॥

आ सत्येन रर्जसा वर्तमानो निवेशयंन्नमृतं मर्त्यं च। हिर्ण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवना विपश्यन्। अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुक्रतुम्॥ येषामीशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत च द्विपदाम्। निष्कीतोऽयं यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यर्जमानस्य सन्तु॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय आदित्याय नमः॥१॥ अग्निर्मूर्द्धा दिवः कुकुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतार्रसि जिन्वति। स्योना पृथिवि भवाऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म सुप्रथाः। क्षेत्रस्य पतिना वयः हिते नेव जयामसि। गामश्रं _ पोषयिल्वा स नौ मृडातीदृशै॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय अङ्गारकाय नमः॥२॥ प्रवः शुक्रायं भानवं भरध्वश हव्यं मृतिं चाम्रये सुपूतम्॥ यो दैव्यानि मानुषा जनूङ्घ्यन्तर्विश्वानि विद्याना जिगाति॥ इन्द्राणीमासु नारिषु सुपलीमहमेश्रवम्। न ह्यस्या अपुरञ्चन जुरसा मर्तते पतिः॥ इन्द्रं वो विश्वतस्परि हर्वामहे जनैभ्यः। अस्मार्कमस्तु केवेलः॥

अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय शुक्राय नमः॥३॥

आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम् वृष्णियम्। भवा वाजस्य सङ्गथे॥ अप्सु मे सोमो अबवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। अग्नि र्च विश्वर्याम्भुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सिललानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापदी नवंपदी बभूवुषी सहस्रौक्षरा परमे व्योमन्। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥४॥

उद्बंध्यस्वाये प्रतिजागृह्येनमिष्टापूर्ते सश्सृजेथाम्यं चे। पुनेः कृण्वङ्स्त्वो पितरं युवानमन्वाता स्तीत्विय तन्तुमेतम्॥ र्राटमिस् विष्णौः पृष्ठमसि विष्णोः श्रम्नैस्थो विष्णोः स्यूरिस विष्णौर्भ्रवमंसि वैष्णवमंसि विष्णवे त्वा। अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बुधाय नमः॥५॥

बृहंस्पते अतियद्यों अहाँद्विमद्विभाति कर्तुमज्जनेषु। यद्दीद्यच्छवंसर्त-प्रजात तद्स्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ इन्द्रमरुत्व इह पाहि सोमं यथां शार्याते अपिबः सुतस्यं। तव प्रणीती तवं शूरशर्मन्नाविवासन्ति कवर्यः सुयज्ञाः॥ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचौ वेन ञावः। सबुधियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवेः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय बृहस्पतये नमः॥६॥

शं नो देवीर्भिष्ट्य आपौ भवन्तु पीतयै। शंयोर्भिस्रवन्तु नः॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बंभूव।

यत्कोमास्ते जुहुमस्तन्नौ अस्तु वयङ् स्योम् पतयो रयीणाम्। इमं यमप्रस्तरमाहि सीदाऽङ्गिरोभिः पितृभिः संविदानः। आत्वा मन्त्रौः कविशस्ता वेहन्त्वेना राजन् हविषा माद्यस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय रानैश्चराय नमः॥७॥ कयां नश्चित्र आभुंवदूती सदावृधः सखाः। कया राचिष्ठया वृता। आऽयङ्गौः पृश्निरक्रमीद्सनन्मातरं पुनः। पितरं च प्रयन्त्सुवः। यत्ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध दाम ग्रीवास्वविचर्त्यम्। इदं ते तिद्विष्याम्यायुषो न मध्याद्याजीवः पितुमिद्धि प्रमुक्तः॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय राहवे नमः॥८॥ केतुं कृण्वन्नेकेतवे पेशौ मर्या अपेशसै। समुषद्भिरजायथाः॥ ब्रह्मा देवानां पदवीः केवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। इयेनो गृघ्राणाङ् स्वधितिर्वनानार् सोमः पवित्रमत्येति रेभन्। (ऋक्) सचित्र चित्रं चितयन् तमस्मे चित्रंक्षत्र चित्रतमं वयोधाम्। चन्द्रं र्यिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रंचन्द्राभिर्गृणते युवस्व॥ अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय केतवे नमः॥९॥ ॥ ॐ आदित्यादि नवग्रहदेवंताभ्यो नमो नर्मः॥ ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नक्षत्रसूक्तम् ॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मणम् अष्टकम् – ३/प्रश्नः – १) (तैत्तिरीय संहिता काण्डम् – ३/प्रपाठकः – ५/अनुवाकः –१)

अग्निनीः पातु कृत्तिकाः। नक्षत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमासां विचक्षणम्। हविरासं जुंहोतन। यस्य भान्ति र्श्मयो यस्यं केतवः। यस्येमा विश्वा भुवनानि सर्वा। स कृत्तिकाभि-रिभसंवसानः। अग्निनी देवः सुविते देघातु॥१॥

प्रजापंते रोहिणी वेतु पत्नी। विश्वरूपा बृह्ती चित्रभानुः। सा नौ यज्ञस्यं सुविते दंघातु। यथा जीवेम शरदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तात्। विश्वां रूपाणि प्रतिमोदंमाना। प्रजापंतिश् ह्विषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्॥२॥

सोमो राजा मृगर्शीर्षेण आगन्ने। शिवं नक्षेत्रं प्रियमेस्य धामे। आप्यायमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु। यत्ते नक्षेत्रं मृगर्शीर्षमस्ति। प्रिय॰ रोजन् प्रियतमं प्रियाणाम्। तस्मै ते सोम हविषां विधेम। शं ने एधि द्विपदे शं चतुष्पदे॥३॥

आर्द्रयां रुद्रः प्रथमा न एति। श्रेष्ठौ देवानां पतिरिष्ट्रयानाम्। नक्षत्रमस्य ह्विषां विधेम। मा नः प्रजाश्र रीरिष्टन्मोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिणो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षत्रं जुषताश्र ह्विनैः। प्रमुख्यमानौ दुरितानि विश्वा। अपाघश्रश्रं सन्नुदतामरातिम्॥४॥

पुनर्नों देव्यदितिः स्पृणोतु। पुनर्वसू नः पुनरेतां यज्ञम्। पुनर्नों देवा अभियन्तु सर्वे। पुनः पुनर्वो हिवषां यजामः। एवा न देव्यदितिरनुर्वा। विश्वस्य भुत्रीं जर्गतः प्रतिष्ठा। पुनर्वसू हिवषां

वर्धयन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥५॥

बृह्स्पतिः प्रथमं जायमानः। तिष्यं नक्षत्रमभि सम्बंभूव। श्रेष्ठों देवानां पृतेनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृह्स्पतिनः परिपातु पृश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्यः स्याम॥६॥

इद् स्पेंभ्यौ ह्विरेस्तु जुष्टम्। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः। ये अन्तरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नः स्पांसो ह्वमार्गिमष्ठाः। ये रौचने सूर्यस्यापि स्पाः। ये दिवं देवीमनुस् अर्रन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्। तेभ्यः स्पेंभ्यो मधुमजुहोमि॥७॥

उपहृताः पितरो ये मघासुं। मनौजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमार्गमिष्ठाः। स्वधाभिर्यज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्। ये अग्निद्ग्धा येऽनिन्नदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याङ्श्चं विद्मयाः उ च न प्रविद्म। मघासुं यज्ञः सुकृतं जुषन्ताम्॥८॥

गवां पितः फल्गुंनीनामित् त्वम्। तद्र्यमन् वरुणिमित्र चार्रः। तं त्वां वयः सिन्तारः सनीनाम्। जीवा जीवन्तमुप संविद्रोम। येनेमा विश्वा भुवनानि सिन्निता। यस्य देवा अनुसंयन्ति चेतः। अर्यमा राजाऽजरुस्तु विष्मान्। फल्गुंनीनामृष्मो रोरवीति॥९॥

श्रेष्ठौ देवानौ भगवो भगासि। तत्त्वो विदुः फल्गुनीस्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रमजर्रं सुवीर्यम्। गोमदश्चंवदुपसन्नुदेह। भगो ह दाता भग इत्प्रदाता। भगो देवीः फल्गुनीराविवेश। भगस्येत्तं प्रस्वं गमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥१०॥ आयांतु देवः संवितोपयातु। हिर्ण्ययेन सुवृता रथेन। वहन् हस्तर्थं सुभगं विद्यनापसम्। प्रयच्छन्तं पपुरि पुण्यमच्छ। हस्तः प्रयच्छ त्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारम् संविता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवाति यज्ञम्॥११॥

त्वष्टा नक्षत्रमभ्येति चित्राम्। सुभगं संसं युवति रोचंमानाम्। निवेशयंत्रमृतान्मर्त्या ध्र्या रूपाणि पि श्रेशन् भुवनानि विश्वा। तन्नस्त्वष्टा तद्वं चित्रा विचंष्टाम्। तन्नक्षत्रं भृरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नः प्रजां वीरवंती र सनोत्। गोभिनों अश्वैः समनक्त यज्ञम्॥१२॥ वायुर्नक्षत्रमभ्येति निष्ट्याम्। तिग्मर्थङ्गो वृष्यो रोरुवाणः। समीरयन् भुवना मात्रिश्वा। अप द्वेषा स्ति नुदतामरातीः। तन्नो वायुस्तद्व निष्ट्या श्रणोत्। तन्नक्षत्रं भृरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वा॥१३॥

दूरम्स्मच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणुतां तद्विशाखे। तन्नौ देवा अनुमदन्तु युज्ञम्। पृश्चात् पुरस्ताद्रभयं नो अस्तु। नक्षत्राणामधिपत्नी विशाखे। श्रेष्ठाविन्द्राग्नी भुवनस्य गोपौ। विष्चः शत्रूनपुबाधमानौ। अप क्षुधं नुदतामर्रातिम्॥१४॥

पूर्णा पृश्चाद्धत पूर्णा पुरस्तात्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधिसंवसन्तः। उत्तमे नाकं इह मदियन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवतिः सजोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभमाना। आप्याययन्ती दुरितानि विश्वां। उरुं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥ १५॥ ऋद्यास्म ह्व्यैर्नमसोपसर्य। मित्रं देवं मित्रधेयं नो अस्तु।

अनूराधान् ह्विषां वर्धयेन्तः। श्वतं जीवेम शरदः सवीराः। चित्रं नक्षेत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधा स इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पथिभिर्देवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतैर्न्तरिक्षे॥१६॥

इन्द्रौ ज्येष्ठामनु नक्षेत्रमेति। यस्मिन् वृत्रं वृत्र तूर्यै ततारे। तस्मिन्वयममृतं दुर्हानाः। क्षुधं तरेम दुरितिं दुरिष्टिम्। पुरन्द्रायं वृष्भायं धृष्णवे। अषाढाय सहमानाय मीढुषे। इन्द्रीय ज्येष्ठा मधुमदुर्हाना। दुरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्॥१७॥

मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। पराँच्येतु निर्ऋतिः पराचा। गोभिर्नक्षंत्रं पशुभिः समक्तम्। अर्हर्भूयाद्यजमानाय मह्मम्। अर्हर्नो अद्य सुविते दंधातु। मूलं नक्षेत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। श्विवं प्रजाये शिवमस्तु मह्मम्॥१८॥

या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभृदुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यास्रीमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्च नाद्याः समुद्रियाः। याश्च वैश्वन्तीरुत प्रांसचीर्याः। यास्रीमषाढा मधु भक्षयन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भवन्तु॥ १९॥ तन्नो विश्वे उपं श्रण्वन्तु देवाः। तद्षाढा अभिसंयन्तु यज्ञम्। तन्नक्षत्रं प्रथतां पशुभ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्। शुभ्राः कन्यां युवतयः सुपेश्रसः। कर्मकृतः सुकृतो वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् ह्विषां वर्धयन्तीः। अषाढाः काममुप्यान्तु यज्ञम्॥ २०॥ यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत्सवीमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूच् सर्वम्। तन्नो नक्षत्रमभिजिद्विजित्य। श्रियं द्धात्वर्हणीयमानम्। उभौ

लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षेत्रमभिजिद्विचेष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतेनाः सञ्जेयेम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्॥२१॥

शृण्वन्ति श्रोणाममृतस्य गोपाम्। पुण्यामस्या उपश्रणोमि वाचम्। महीं देवीं विष्णुपत्नीमजूर्याम्। प्रतीची मेनाश् ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुरुरुगायो विचेक्रमे। महीं दिवै पृथिवीमन्तरिक्षम्। तच्छोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्यश्र् श्लोकं यजमानाय कृण्वती॥२२॥

अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासः। चतंस्रो देवीर्जराः श्रविष्ठाः। ते युइं पौन्तु रजसः पुरस्तौत्। संवृत्सरीणममृतङ् स्वस्ति। युइं नः पान्तु वसंवः पुरस्तौत्। दुक्षिणतौऽभियन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षेत्रमभि संविशाम। मा नो अरोतिरुघशुरसाऽगन्न्॥ २३॥

क्षत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षत्राणाः श्वातिमेष्वग्वसिष्ठः। तौ देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्वातः सहस्रा भेषुजानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः। तन्नो नक्षत्रः श्वातिमेषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्भेषुजानि॥२४॥

अज एकपादुदंगात्पुरस्तात्। विश्वा भूतानि प्रति मोदंमानः। तस्यं देवाः प्रस्तवं यन्ति सर्वे। प्रोष्ठपदासो अमृतंस्य गोपाः। विश्वाजमानः समिधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहृदगुन्द्याम्। तश्स्ये देवमुजमेकपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुयन्ति सर्वे॥२५॥

अहिर्बुधियः प्रथमा न एति। श्रेष्ठौ देवानामुत मानुषाणाम्। तं ब्राह्मणाः सोमपाः सोम्यासः। प्रोष्ठपदासौ अभिरंक्षन्ति सर्वै। चत्वार् एकमि कमें देवाः। प्रोष्ठपदा स इति यान् वदिन्ति। ते बुिध्यं परिषद्यर्भं स्तुवन्तः। अहिर्ं रक्षन्ति नर्मसोप्सर्य॥२६॥

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थाम्। पुष्टिपती पशुपा वार्जवस्त्यौ। इमानि ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पशून् रक्षतु रेवती नः। गावौ नो अश्वार अन्वेतु पूषा। अञ्चर रक्षन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर्र सनुतां यर्जमानाय यज्ञम्॥२७॥

तद्धिनविश्वयुजोपेयाताम्। शुभुङ्गमिष्ठौ सुयमेभिरश्वैः। स्वं नक्षेत्रश हविषा यर्जन्तौ। मध्वासम्पृक्तौ यर्जुषा समक्तौ। यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ। विश्वस्य दूतावमृतस्य गोपौ। तौ नक्षेत्रं जुजुषाणोपेयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्याम्॥२८॥

अपं पाप्मानं भरेणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भर्गवान् विचेष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षेत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यिषश्चन्त देवाः। तदस्य चित्रश् हृविषां यजाम। अपं पाप्मानं भरेणीर्भरन्तु॥२९॥

निवेशनी सङ्गर्मनी वसूनां विश्वा रूपाणि वसून्यावेशयन्ती। सहस्रपोष स्पुभगा रर्गणा सा न आगुन्वचैसा संविदाना॥ यत्ते देवा अद्धुर्भागुधेयममावास्ये संवसन्तो महित्वा। सा नौ युइं पिपृहि विश्ववारे रुपिं नौ धेहि सुभगे सुवीरम्॥३०॥

॥ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्॥

ॐ भद्रं कर्णीभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजेत्राः। स्थिरेरङ्गैस्तुष्टुवाः संस्तुनूभिः। व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रौ वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यौ अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

ॐ नर्मस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वंमिस। त्वमेव केवछं कर्तांऽसि। त्वमेव केवछं धर्तांऽसि। त्वमेव केवछं हर्तांऽसि। त्वमेव सर्वं खित्वदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मांऽसि नित्यम्॥१॥

ऋतं विचा। सत्यं विचा॥२॥

अवं त्वं माम्। अवं वक्तारम्। अवं श्रोतारम्। अवं दातारम्। अवं धातारम्। अवानूचानमंव शिष्यम्। अवं पश्चात्तात्। अवं पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अवं दक्षिणात्तात्। अवं चोध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहिं समुन्तात्॥३॥

त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सचिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मसि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि॥४॥

सर्वं जगदिदं त्वत्त्वों जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्त्वंस्तिष्ट्वि। सर्वं जगदिदं त्विय लयमेष्यिति। सर्वं जगदिदं त्वियं प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नुभः। त्वं चत्वारि वाक्परिमितां पदानि॥५॥ त्वं गुणत्रयातीतः। त्वम् अवस्थात्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधारस्थितौऽसि नित्यम्। त्वं शक्तित्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥६॥

गणादिं पूर्वमुचार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दुलिस्तम्। तारेण ऋद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चौन्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादेः सन्धानम्। सश्हिता सन्धिः। सेषा गणेशविद्या। गणेक ऋषिः। निचृद्गायंत्रीच्छन्दः। श्रीमहागणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नर्मः॥७॥

एकदन्तायं विद्यहें वक्रतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्ती प्रचोदयात्॥८॥ एकदन्तं चंतुर्हस्तं पाशमंङ्कश्चधारिणम्। रदं च वर्रदं हस्तैर्विभ्राणं मूषकध्वजम्॥ रक्तं लम्बोदंरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्।

भक्तांनुकिम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी यौगिनां वर्रः॥९॥

रक्तगन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्यैः सुपूजितम्॥

नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः॥१०॥

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयायं कल्पते। स सर्वविद्वेनं बाध्यते। स सर्वतः सुर्वमेधते। स पञ्चमहापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाश्चयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाश्चयति। सायं प्रातः प्रयुज्जानो अपापो भ्वति। सर्वत्राधीयानोऽपविद्वों भवति। धर्मार्थकाममोक्षं चं विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्यायं न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते तं तमनेनं साध्येत्॥११॥

अनेन गणपितमभिषिञ्चिति स वाग्मी भविति। चतुर्थ्यामनश्नन् जपित स विद्यावान् भविति। इत्यथवीणवाक्यम्। ब्रह्माद्याचरणं विद्यान्न बिभेति कद्यांचनेति॥१२॥

यो दूर्वाङ्करैर्यजित स वैश्रवणोपमो भ्वति। यो ठाजैर्यजित स यशौवान् भ्वति स मेधावान् भ्वति। यो मोद्कसहस्रेण यजित स वाञ्छितफलम्वाप्नोति। यः साज्यसमिद्भिर्यजित स सर्वं लभते स सर्वं लभते॥१३॥

अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्य्राहियत्वा। सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासिन्नधौ वा जत्वा सिद्धमन्त्रौ भवति। महाविद्वात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। सर्वविद्भवति। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। सं सर्वविद्भवति।

य एवं वेद। इत्युपनिषत्॥१४॥

सुह नाववतु। सुह नौ भुनक्तु। सुह वी॒यँ करवावहै। तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ मृत्युञ्जयहोम-मन्त्राः॥

अपैतु मृत्युर्मृतेष्ठ आगेन्वैवस्वतो नो अभेयं कृणोतु। पुर्णं वनस्पतेरिवाभिनेः शीयताः रियः स च तान्नः शचीपितः। परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानौत्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नेः प्रजाः रीरिषो मोत वीरान् ॥ वातं प्राणं मनसाऽन्वा रभामहे प्रजापितिं यो भुवनस्य गोपाः । स नो मृत्योस्त्रायतां पात्वः हिसो ज्योग्जीवा जुरामशीमहि॥

अमुत्र भूयाद्घ यद्यमस्य बृहंस्पते अभिर्शस्तेरमुंञ्चः। प्रत्यौहतामुश्विनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचीभिः॥

हरि<u>श्</u> हर्रन्तमनुयन्ति देवा विश्वस्येशानं वृष्भं मेतीनाम् । ब्रह्म सर्रूपमनुमेदमागादयनं मा विविधीर्विक्रमस्व॥

शल्कैर्प्निमिन्धान उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोर् ऋध्वाऽति मृत्युं तराम्यहम्॥

मा छिदो मृत्यो मा विधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमौषीः । प्रजां मा मे रीरिष् आयुरुय नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम॥

मा नौ महान्त्रमुत मा नौ अर्भुकं मा नु उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।

मा नौऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नेस्तुनुवौ रुद्र रीरिषः॥ मानेस्तोके तनेये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नौ रुद्र भामितोऽवधीर्ह्विष्मेन्तो नर्मसा विधेम ते॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयङ् स्याम पत्रयो रयीणाम्॥

यतं इन्द्रभयामहे ततौ नो अभयं कृधि। मध्वन्छिग्धि तव तन्ने ऊतये विद्विषो विमृधौ जहि॥

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधौ वशी। वृषेन्द्रीः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवधनम्। <u>उर्वारु</u>किमि<u>व</u> बन्धनान्मृत्योमुक्षीय माऽमृतात्॥

अपमृत्युमपक्षुधम्। अपेतः शपर्यं जिह। अधा नो अग्न आवेह। रायस्पोषर्रं सहस्रिणम्॥

ये ते सहस्रम्युतं पाशाः। मृत्यो मत्यीय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं मायया। सर्वानवयजामहे॥

जातवैदसे सुनवाम सोमं मरातीयतो निदंहाति वेदंः। सनः पर्षदिति दुर्गाणि विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्युग्निः॥

भूर्भुवः स्वः। ओजो बलम्। ब्रह्मं क्षत्रम्। यशौ महत्। सत्यं तपो नामं। रूपममृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मन् आयुः। विश्वं यशौ महः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि। शं प्रजाभ्यो यर्जमानाय लोकम्। ऊर्जं पुष्टिं द्दंदुभ्यावेवृत्स्व॥ मत्यनैश्चयत्वायेर्वर्धतां भः। मत्यनैश्चयत्वायेर्वर्धतां भवः।

मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भूः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भुवः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धताः सुवः। मृत्युर्नेश्यत्वायुर्वर्धतां भूर्भुवः सुवः॥